www.thearyasamaj.org

ओ३म्

सुधारक

गुरुकुल झज्जर का लोकप्रिय मासिक पत्र

वर्ष ६४ अंक ४ दिसम्बर २०१६ मार्गशीर्ष २०७३ वार्षिक मूल्य १५० रु०

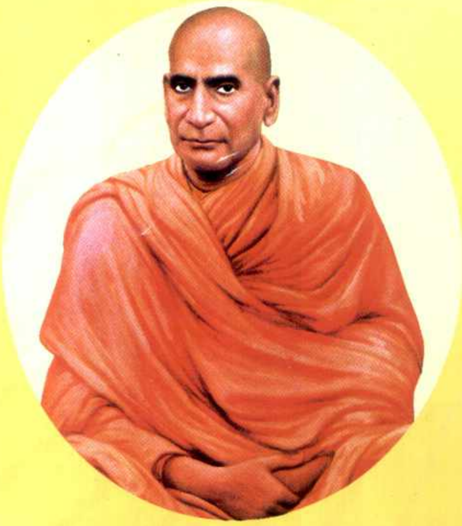

गुरुकुल झज्जर की आधारशीला रखने वाले
अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज
(२३ दिसम्बर १९२६को शहीद हुए)

प्रसिद्ध क्रान्तिकारी
पं० रामप्रसाद बिस्मिल
(१९ दिसम्बर १९२७ को शहीद हुए)

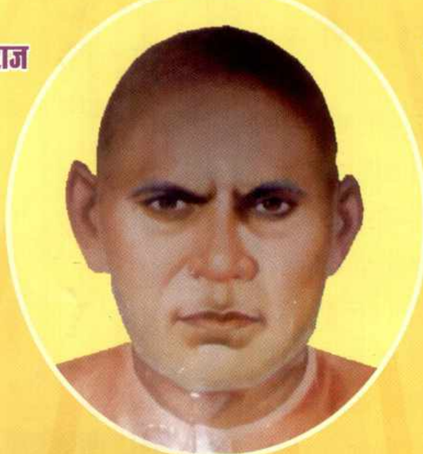

सन् १९५७ के हिन्दी रक्षा सत्याग्रह के सूत्रधार
श्रीस्वामी आत्मानन्द जी योगी
(गुरुकुल झज्जर में १२ दिसम्बर १९६० को निधन हुआ)

संस्थापक : स्व० स्वामी ओ३मानन्द सरस्वती
प्रधान सम्पादक : आचार्य विजयपाल
सम्पादक : विरजानन्द दैवकरणि
व्यवस्थापक : ब्र० अरुण आर्य

www.thearyasamaj.org

सुधारक के नियम व सविनय निवेदन

1. सुधारक का वार्षिक शुल्क 150 रुपये है तथा आजीवन सदस्यता शुल्क 1500 रुपये है।
2. यदि सुधारक 20 तारीख तक नहीं पहुंचता है तो आप व्यवस्थापक सुधारक के नाम से पत्र डालें। पत्र मिलते ही सुधारक पुनः भेज दिया जाएगा।
3. वार्षिक शुल्क तथा आजीवन शुल्क मनीआर्डर द्वारा '**व्यवस्थापक सुधारक**' के नाम भेजें। सुधारक वी.पी. रजिस्ट्री द्वारा नहीं भेजा जाएगा।
4. लेख सम्पादक सुधारक के नाम भेजें, लेख छोटे, सरल, संक्षिप्त, सारगर्भित तथा मौलिक होने चाहिएं तथा स्पष्ट, शुद्ध एवं सुन्दर लेख में कागज के एक ओर लिखे जाने चाहिएं। अशुद्ध एवं गन्दे लेखवाला लेख नहीं छापा जाएगा। लेखों को प्रकाशित करना न करना तथा उनमें संशोधन सम्पादक के अधीन होगा। अस्वीकृत लेख डाक-व्यय प्राप्त होने पर ही वापिस भेजे जाएंगे।
5. सुधारक में विज्ञापन भी दिए जाते हैं, परन्तु विज्ञापन शुद्ध एवं वास्तविक वस्तु का ही दिया जाएगा।
6. यह सुधारक मासिक पत्र समाजसुधार की दृष्टि से निकाला जाता है। इसमें आपको धर्म, यज्ञकर्म, समाजसुधार, देश व समाज की स्थिति, ब्रह्मचर्य, योगासन आदि विषयों पर लेख पढ़ने को मिलेंगे।
7. सुधारक के दस ग्राहक बनानेवाले सज्जन को एक वर्ष तक निःशुल्क सुधारक भेजा जाएगा तथा पचास ग्राहक बनानेवाले सज्जन को दो वर्ष निःशुल्क सुधारक भेजा जाएगा तथा उसका फोटो सहित जीवन परिचय सुधारक में निकाला जाएगा।

–व्यवस्थापक

वर्ष :६४ अंक : ४
दिसम्बर २०१६ विक्रमाब्द २०७३
दयानन्दाब्द १९१ कलिसंवत् ५११७
सृष्टिसंवत्-१,९६,०८,५३,११७

विषय-सूची

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ
१.	आर्याभिविनयः	१
२.	सम्पादकीय	२
३.	आर्यसमाज के लिए शहीद	४
४.	गुरुग्राम या गुड़गांवा	५
५.	गंज निवारण योग	६
६.	वाणी से विष और अमृत	८
७.	गुरुकुलीय क्रीडा प्रतियोगिता सम्पन्न	९
८.	स्वामी श्रद्धानन्द के संस्मरण	१२
९.	पं० रामप्रसाद बिस्मिल	१५
१०.	स्वामी आत्मानन्द जी महाराज	२०
११.	वैदिक चिन्तन शिविर में प्रस्तावित प्रस्ताव	२२
१२.	निमन्त्रण पत्र	२३
१३.	छात्रवृत्ति और सम्मान समारोह सम्पन्न	२४

सुधारक मासिक पत्र का वार्षिक शुल्क १५० रुपये भेजकर स्वयं ग्राहक बनें और दूसरे साथियों को भी ग्राहक बनाकर सुधार कार्य में सहयोग दीजिये।

-व्यवस्थापक सुधारक

आर्याभिविनयः

गतांक का शेष........

(मा विद्विषावहै) और हे जगदीश्वर! आपके सामर्थ्य से हम लोगों में परस्पर विद्वेष, विरोध अर्थात् अप्रीति न रहे। तथा हम लोग कभी परस्पर विद्वेष, विरोध न करें। किन्तु सब=हम लोग तन-मन-धन-विद्या इनको परस्पर सबके सुखोपकार में परम प्रीति से लगावें।

(ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः) हे भगवन्! तीन प्रकार के सन्ताप जगत् में हैं- एक '**आध्यात्मिक**'=शारीरिक-जो ज्वरादि पीड़ा होने से होता है। दूसरा '**आधिभौतिक**' ताप-जो शत्रु सर्प व्याघ्र चौरादिकों से सन्ताप होता है। और तीसरा-जो मन इन्द्रिय अग्नि वायु अतिवृष्टि अनावृष्टि अतिशीत अत्युष्णता इत्यादि से होता है, सो '**आधिदैविक**' ताप है। हे कृपासागर! आप इन तीनों तापों की शीघ्र निवृत्ति करें। जिससे हम लोग अत्यानन्द में और आपकी अखण्ड उपासना में सदा रहें।

हे विश्वगुरो! मुझको असत्=मिथ्या और अनित्य पदार्थ तथा असत् काम से छुड़ाके, सत्य तथा नित्य पदार्थ और श्रेष्ठ व्यवहार में स्थित कर। हे जगन्मङ्गलमय! **सर्वदुःखेभ्यो मोचयित्वा सर्वसुखानि प्रापय**=सब दुःखों से मुझको छुड़ाके सब सुखों को प्राप्त कर।[1] **हे प्रजापते! सुप्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन परमैश्वर्येण संयोजय**=हे प्रजापते मुझको अच्छी प्रजा पुत्रादि, हस्त्यश्वगवादि उत्तम पशु, सर्वोत्कृष्ट विद्या और चक्रवर्ती राज्यादि परमैश्वर्य, जो स्थिर परमसुखकारक, उसको शीघ्र प्राप्त कर।[2] **हे परमवैद्य! सर्वरोगात् पृथक्कृत्य नैरोग्यं देहि**=सर्वथा मुझको सब रोगों से छुड़ाके परम नैरोग्य दे। हे महाराजाधिराज! **मनसा वाचा कर्मणा अज्ञानेन प्रमादेन वा यद्यत्पापं कृतं मया तत्तत्सर्वं कृपया क्षमस्व, ज्ञानपूर्वकपापकरणान्निवर्तय माम्**=मन से वाणी से और कर्म से, अज्ञान वा प्रमाद से जो पाप किया हो; किंवा करने का हो, उस-उस मेरे पाप को क्षमा कर। [और ज्ञानपूर्वक पाप करने से भी मुझको रोक दे][1] जिससे मैं शुद्ध होके आपकी सेवा में स्थिर होऊं। **हे न्यायाधीश! कुकामकुलोभकुमोहभयशोकालस्येर्ष्याद्वेष-प्रमादविषयतृष्णानैष्ठुर्याभिमानदुष्टभावाविद्याभ्यो निवारय, एतेभ्यो विरुद्धेषूत्तमेषु गुणेषु संस्थापय माम्**=हे ईश्वर! कुकाम कुलोभादि पूर्वोक्त दुष्ट दोषों को स्वकृपा से छुड़ाके श्रेष्ठ काम आदि में यथावत् मुझको स्थिर कर। मैं अत्यन्त दीन होके यही मांगता हूं कि मैं आप और आपकी आज्ञा से भिन्न पदार्थ में कभी प्रीति न करूं। हे प्राणपते, प्राणप्रिय, प्राणपितः, प्राणाधार, प्राणजीवन, स्वराज्यप्रद! मेरे प्राणपति आदि आप ही हो। मेरा सहायक आपके सिवाय कोई नहीं। हे राजाधिराज! जैसा सत्य न्याययुक्त अखण्डित आपका राज्य है, वैसा न्यायराज्य हम लोगों का भी आपकी ओर से स्थिर हो। आपके राज्य के अधिकारी किङ्कर अपने कृपाकटाक्ष से हमको शीघ्र ही कर। हे न्यायप्रिय! हमको भी न्यायप्रिय यथावत् कर। हे धर्माधीश! जैसे-माता और पिता अपने सन्तानों का पालन करते हैं, वैसे ही आप हमारा पालन करो।। 1।।[1]

सम्पादकीय

॥ओ३म्॥

विविध प्रसंग

भारत के प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी ने असंवैधानिक उपायों से धन जमा करने वाले जमाखोरों की जेब से कालाधन निकालने के लिए अचानक पग उठाकर पांच सौ और एक हजार रुपये के प्रचलित नोट 8 नवम्बर 2016 से बन्द कर दिये जाने की घोषणा की है। कालाधन निकालने के लिए तो यह कार्यवाही उचित ही है, परन्तु अचानक इस व्यवस्था परिवर्तन से सामान्य जनता को दैनिक व्यवहार हेतु धनप्राप्ति में असीमित कठिनाइयां उठानी पड़ रही हैं इसका उचित समाधान भी साथ ही कर देना चाहिये था। यद्यपि प्रधानमन्त्री की ओर से पहले भी कई बार संकेत किये जा चुके थे कि अपनी राशि बैंकों में जमा करके टैक्स चुका दिया जाये। परन्तु यदि यह घोषणा भी की जाती कि अमुक तिथि तक एक हजार रुपये के सभी नोट बैंकों में जमा कर दें, तदनन्तर इनका प्रचलन बन्द होजायेगा। इसी प्रकार कुछ समय पश्चात् पांच सौ रुपये के नोटों के लिए भी इसी प्रकार का प्रावधान करना उचित था। भविष्य में एक सौ रुपये के नोटों के लिए भी यही प्रक्रिया अपनाई जाने की सम्भावना करना उचित था। भविष्य में एक सौ रुपये के नोटों के लिए भी यही प्रक्रिया अपनाई जाने की सम्भावना है। इस विधि से सत्य का कार्य भी उचित रीति से चलता रहता और यह अफरा-तफरी नहीं मचती और जनता को असुविधा भी नहीं होती। नोट बन्द करने का आदेश देकर अधिकारी तो एक ओर हो गये, परन्तु कठिनाइयां जनता को भुगतनी पड़ रही हैं। बैंकों के सामने घण्टों प्रतीक्षा करने के पश्चात् बैंक के चपरासी की ओर से सूचना मिलती है कि नये नोट नहीं आ रहे, एक बजे के बाद आना, कल आना आदि आदि। क्या किसी उच्च अधिकारी ने इस प्रकार बैंकों के सामने पंक्ति में लगकर घण्टों तक प्रतीक्षा की है? अथवा प्रतीक्षा के पश्चात् भी सायंकाल खाली हाथ लौटकर देखा है? इनके निजी व्यक्ति पंक्ति में न लगकर सीधे बैंक के भीतर जाकर कर्मचारियों के द्वारा राशि जमा करवाते तथा नये नोट लेते देखे गये हैं; ऐसे अवसरों पर जनता की चिल्लाहट भी अनसुनी होती रही है। इस प्रकार की अव्यवस्था के चलते हुए सीमित समय में पुराने नोट जमा कराने के कारण लोग 35 प्रतिशत तक छूट लेकर धनी व्यक्ति के कालेधन को सही दिखाने का कार्य भी कर रहे हैं, इससे भ्रष्टाचार को बढावा मिल रहा है। बैंकों से यथा समय राशि न मिलने से दैनिक प्रयोग के पदार्थ पूरे नहीं मिल रहे, दुकानदार खाली बैठे ग्राहकों की प्रतीक्षा करते-करते सायंकाल उदास मन से घर लौट रहे हैं।

अत: पहले से ही पर्याप्त नये नोट छापकर यथा स्थान पहुंचा दिये जाने चाहियें थे, जिससे प्रतिदिन की भांति सामान्य रूप से कार्य चलता रहता और यह अव्यवस्था तथा परेशानी नहीं होती। जमाखोरों के स्वभाव को देखते हुए यह आशंका भी व्यक्त की जा सकती है कि इन नये दो हजार के नोटों को भी यदि वे लोग पूर्व की भांति जमा करने लग जायेंगे तो इसके लिये क्या सरकार कुछ काल पश्चात् इनको भी बन्द कर देगी, इस पर भी विचार होना चाहिये।

श्री मोदी जी अपने निर्णय को 'कड़क चाय' की भांति मानते हैं। किसी भी उचित बात के लिए इस प्रकार की दृढता होनी प्रशंसनीय है। यदि इसी कड़कचाय की भांति धारा 370 समाप्त करना, बाबरी मस्जिद के स्थान पर राममंदिर बनाना तथा अंग्रेजी की अनिवार्यता हटाकर हिन्दी-संस्कृत की प्राथमिकता को क्रियान्वित कर दिया जाये। मार्क्सवादी कम्यूनिष्ट पार्टी ने पांच सौ और दो हजार रुपये के नोट पर छपे देवनागरी के अंकों को असंवैधानिक बताया है। ये अंक महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, राजस्थान, उत्तरप्रदेश, हरयाणा के पुराने लोगों में तथा नेपाल में व्यवहृत होते हैं, संविधान में संशोधन करके इन अंकों को भी मान्यता प्रदान कर दी जाये तो देश की बहुत बड़ी समस्या का समाधान हो सकता है।

भारतीय संस्कृति की पोषक भारतीय जनता पार्टी के लिये यह ऐतिहासिक कार्य सिद्ध होगा।

पंजाब व हरियाणा का जल विवाद

हिन्दू कहलाने वाले लोगों में पहले सिख, जैन और बौद्ध भी सम्मिलित थे, परन्तु देश के दुर्भाग्यवश ये लोग स्वयं को पृथक् मानने लग गये। सिख गुरुओं ने हिन्दू धर्म की रक्षा हेतु बलिदान दिये। उन गुरुओं पर मुसलमान बादशाह ही अमानुषिक अत्याचार करते थे। गुरु अर्जुनदेव, गुरु तेग बहादुर, गुरु गोविन्दसिंह और उनके पुत्र इसमें प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। पंजाब के मुख्यमन्त्री प्रकाशसिंह बादल ऐसे अत्याचारियों के वंशज पाकिस्तानी मुसलमानों के लिये तो नदियों का पानी दे सकते हैं, परन्तु हरियाणा को उस पानी की एक बूंद भी देने के लिए तैयार नहीं हैं। नाम बादल है तो उसे बिना पक्षपात के सबको समान रूप से जल प्रदान करना चाहिये। हिन्दू कहलाने वाले व्यक्ति तो अपने परिवार के किसी व्यक्ति के मरने के बाद भी उसे जल पिलाने के लिए श्मशानघाट में अथवा पीपल आदि पेड़ पर पानी का घड़ा रख देते हैं, यह कर्म है तो अज्ञानता का प्रतीक, पुनरपि जल पिलाने की भावना तो है। परन्तु श्री बादल तो जीवित मनुष्यों, पशुओं और कृषि तक को प्यासा रखने का हठ किये हुए हैं। कम से कम अपने बादल नाम की ही शर्म रखली होती। धूप-हवा-पानी ये पदार्थ भगवान् ने सबके लिये प्रदान किये हैं; इन पर किसी व्यक्ति विशेष को द्वेष भावना के कारण अपना अधिकार समझना अनधिकार चेष्टा है। दुर्योधन ने भी अभिमान में आकर पाण्डवों को यह कहा था कि बिना युद्ध के सूई की नोक के बराबर भी भूमि नही दूंगा। उसका यह अहंकार उसे ले डूबा। श्री प्रकाशसिंह बादल को दुर्योधन की दुर्गति से शिक्षा लेनी चाहिये। यह भूमि ओर जल यहीं रह जायेगा, अहंकार करने वाले चले जायेंगे अत: श्री बादल को अपने दिल में उदारता का भाव लाना चाहिये जिससे सभी व्यक्तियों को सुख मिल सके।

आदर्शग्राम योजना

भारत सरकार ने लोकसभा सांसदों से कहा है कि प्रत्येक सांसद सन् 2019 तक तीन-तीन आदर्शग्राम बनाये। उन्होंने आदर्श की सीमा बाह्य साफ-सफाई तक ही रक्खी है। यदि वस्तुत: किसी ग्राम को आदर्श ग्राम बनाना चाहते हैं तो वहां के निवासियों में परस्पर भाईचारा बनाने तथा राग-द्वेष, लड़ाई-झगड़े से दूर रखने के लिए भी प्रयत्न किया जाये। कोई भी ग्रामवासी किसी भी प्रकार का अपराध न करे, किसी को पुलिस, कोर्ट, कचहरी में जाने की आवश्यकता न रहे। हत्या, बलात्कार, चोरी, दुराचार, भ्रूणहत्या, झूठ, छल, कपट का आचरण न करे। कोई व्यक्ति अण्डे, मांस, मछली, अफीम, गांजा, तम्बाकू, बीड़ी, सिगरेट, शराब, स्मैक आदि अभक्ष्य और नशीले पदार्थों का सेवन न करे। जब इस प्रकार के बाह्य और आन्तरिक रूप से पवित्रता रखने वाले लोग बाह्य स्वच्छता हेतु प्रतिदिन आसन, व्यायाम, प्राणायाम, स्नान, यज्ञ आदि करें। आन्तरिक पवित्रता के लिए सन्ध्या, सच्चे साधु संन्यासी, महात्मा, विद्वानों का संग करें। जब इस प्रकार के बाह्य और आन्तरिक रूप से पवित्रता रखने वाले लोग ग्रामों में निवास करेंगे, तभी वे ग्राम आदर्शग्राम कहलाने के वस्तुत: अधिकारी होंगे।

जब दुर्गुण दूर करके सद्गुण ग्रहण किये जायेंगे तभी जीवन आदर्श बन पायेगा। बाह्य रूप से ग्राम को स्वच्छ कर दिया, झाड़ू लगा दी, कूड़ा कूड़े दान में डाल दिया, फूलोंके बगीचे लगा दिये, रोशनी का प्रबन्ध कर दिया, सड़क की मरम्मत कर दी, गलियां चौड़ी और पक्की होगई, गन्दे पानी की निकासी की व्यवस्था होगई, घरों के बाहर-भीतर सफेदी आदि करादी गई, इस प्रकारके कार्य बाह्य शुद्धि कहाते हैं। इसके साथ-साथ आन्तरिक पवित्रता की ओर भी विशेष ध्यान देना होगा, तभी हमारी आदर्श ग्राम योजना पूर्ण सफल कहलायेगी।

आशा है सांसद महानुभाव इस अयाचित परामर्श की ओर ध्यान देकर तथा कार्यान्वित करके अपनी योजना को सफल करने में गौरव अनुभव करेंगे।

-विरजानन्द दैवकरणि

www.thearyasamaj.org

परोपकारिणी सभा के प्रधान डॉ० धर्मवीर जी

आर्यसमाज के लिये शहीद

शायद सन् 1956 की बात है, धर्मवीर नाम का एक बच्चा गुरुकुल झज्जर (हरयाणा) में अध्ययन के लिये प्रविष्ट हुआ। मैं उन दिनों गुरुकुल झज्जर में संरक्षक और अध्यापक था। ब्र० धर्मवीर मेरे संरक्षण में आया और मैंने तुरन्त पहचान लिया कि ब्र०धर्मवीर एक कुशाग्र बुद्धि बालक है। बोलने से तुरन्त पता चल गया कि ब्र० धर्मवीर बोलने में भी वाग्मी है।

गुरुकुल झज्जर के वार्षिक उत्सवों पर ब्रह्मचारियों के भी भाषण रखे जाते थे। पहले ही वार्षिक उत्सव पर भाषण के लिये मैंने ब्र० धर्मवीर को चुना उसके लिये भाषण लिखा और उसे वह भाषण याद करवाया। भाषण देने के समय ब्र० धर्मवीर का नाम पुकारा गया, ब्र० धर्मवीर इतना छोटा था कि स्वयं स्टेज पर चढ़ नहीं सकता था, मैंने उसे अपनी गोदी में उठाकर स्टेज पर चढाया। ब्र० धर्मवीर ने फटाफट अपनी ओजस्वी वाणी से भाषण दिया और भाषण समाप्त होते ही श्रोताओं ने तालियों से वातावरण को गुञ्जा दिया, अनेक लोगों ने ब्र० धर्मवीर पर पारितोषिकों की वर्षा कर दी। यह था मेरा ब्र० (डॉ०) धर्मवीर के साथ सम्बन्ध। ब्र० धर्मवीर मुझे हमेशा अपना पितृवत् गुरु मानते थे। कहानी तो आयु भर तक लम्बी है।

समय बीता। ब्र० धमवीर गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय में प्रविष्ट हुवे। मैं गुरुकुल कांगड़ी में वेद विभाग में अध्यापक नियुक्त हुवा। ब्र० धर्मवीर प्रतिदिन मुझे सायंकाल हर की पोड़ी पर घुमाने ले जाते और गंगा के ठण्डे पानी में आम भिगो भिगोकर मुझे खिलाते।

अजमेर में डॉ० धर्मवीर जी की नियुक्ति डी०ए०वी० कालिज़ में प्राध्यापक पद पर हुई, साथ-साथ स्वामी ओमानन्द जी ने उन्हें परोपकारिणी सभा में भी सेवा के लिये रख लिया। प्रधान के रूप में परोपकारिणी सभा को डा० धर्मवीर ने चरम उत्कर्ष पर पहुचा दिया। क्या भवन निर्माण, क्या प्रकाशन कार्य, क्या परोपकारी पत्रिका, सब प्रकार से सभा की नि:शुल्क सेवा करते हुए सभा का नाम सर्वोच्च स्थान पर ले आये। डॉ० धर्मवीर गृहस्थ होते हुवे एक संन्यासी थे। अन्तर्राष्ट्रिय स्तर के विद्वान्, लेखक और वक्ता थे। आर्यसमाज पिलखवा (उ०प्र०) के कार्यक्रम में बीमार अवस्था में भी भाषण देने गये थे, बीमार होते हुवे भी दवाई खाते-खाते भाषण देते रहे। अन्ततो गत्वा अजमेर में 6 अक्तूबर सन् 2016 में प्रात: 5 बजे आर्यसमाज की बलि वेदी पर शहीद होगये। आर्यसमाज ने एक अनमोल रत्न खो दिया, उस की क्षतिपूर्त्ति असम्भव है।

डॉ० महावीर मीमांसक
ए- 3/11, पश्चिम विहार
नई दिल्ली-110063

www.thearyasamaj.org

विचारणीय बिन्दु

गुरुग्राम या गुड़गांवा

हरियाणा सरकार ने गुड़गांव का नाम गुरुग्राम रख दिया है। इससे पूर्व गुड़गांव के पास मैट्रो स्टेशन का नाम गुरु द्रोणाचार्य रखा हुआ है।

हरियाणा सरकार ने भी सम्भवतः गुरुद्रोणाचार्य को अभिलक्षित करके ही गुरुग्राम निश्चित किया होगा। किसी व्यक्ति विशेष की स्मृति को चिरस्थायी बनाने हेतु भी किसी संस्था अथवा सार्वजनिक स्थल का नाम प्रायः करके रखने की प्रथा है। ऐसा करने से उन लोगों के प्रति आस्था प्रकट करने का ही अभिप्राय होता है। यदि गुड़गांवा का नाम इसी आस्था के कारण गुरुद्रोणाचार्य का लक्ष्य करके रक्खा है तो ठीक है।

परन्तु यह मानकर कि गुरु द्रोणाचार्य का निवास यहां रहा है, अथवा यह उनका ग्राम था, ऐसा सोचकर यदि नाम बदला है तो यह बहुत बड़ी ऐतिहासिक भूल है। क्योंकि गुरु द्रोणाचार्य हस्तिनापुर में कौरव-पाण्डवों के धनुर्विद्या आदि के गुरु रहे हैं; यह स्थान मेरठ के पास है। कौरव-पाण्डवों की शिक्षापूर्ति के उपरान्त गुरु द्रोणाचार्य ने गुरुदक्षिणा स्वरूप मांग की थी कि उत्तर और दक्षिण पांचाल के शासक द्रुपद ने मेरा अपमान किया है, अतः उसे पकड़कर लाओ। फलतः क्षत्रिय वीरों ने गुरु द्रोणाचार्य की आज्ञा का पालन किया और राजा द्रुपद को पकड़कर द्रोणाचार्य के सम्मुख उपस्थित किया। गुरु द्रोणाचार्य ने दण्डस्वरूप अथवा अपमान का बदला लेने के लिए राजा द्रुपद का आधा राज्य उत्तर पांचाल अपने अधिकार में कर लिया और राजा द्रुपद को वापिस भेजा दिया। उत्तर पांचाल का क्षेत्र वर्तमान बरेली, मुरादाबाद, चन्दौसी, रामपुर आदि का है। दक्षिण पांचाल फर्रुखाबाद के निकटवर्ती क्षेत्र था। जो राजा द्रुपद के पास रह गया। यह सब इतिहास महाभारत में लिखा हुआ है। इस प्रकार सिद्ध है कि वर्तमान गुड़गांव या इसके निकट के क्षेत्र से गुरुद्रोणाचार्य का कोई सम्बन्ध नहीं रहा है। गुड़गांवां का गुरु द्रोणाचार्य से जोड़कर नाम परिवर्तन करना इतिहास से अनभिज्ञता प्रकट करना है।

अतः हरियाणा सरकार यह स्पष्ट करे कि गुड़गांवां का नाम परिवर्तन किस आधार पर किया है? गुरु द्रोणाचार्य का सम्मान करने हेतु अथवा गुड़गांवां को उनका मूल निवास स्थान मानकर किया है।

वस्तुत यमुना पार के इस क्षेत्र में गुड़ की उपलब्धि हेतु यहां गुड़की बहुत बड़ी मण्डी थी। उत्तरप्रदेश की ओर से यहां गुड़ लाया जाता था। इस मण्डी से गुड़ का व्यापार राजस्थान की ओर होता था, इसीलिये गुड़ की मण्डी होने से यह गांव गुड़गांवां कहलाने लगा। दिल्ली में शक्तिनगर, त्रिपोलिया, प्रतापनगर के पास गुड़मण्डी है। क्या उसे भी गुरुमण्डी कहा जाने लगेगा? अपना पक्ष स्थापित करने हेतु ऐतिहासिक प्रमाण होने चाहिएं।

-विरजानन्द दैवकरणि

गंज निवारण योग

योगिराज सिद्धश्रेष्ठ नागभट्ट द्वारा रचित कामरत्नतन्त्रम् संस्कृत ग्रन्थ की मुरादाबाद निवासी पं० बलदेव प्रसाद मिश्र द्वारा मराठी अनुवाद सहित सन् 1904 में कलकत्ता से प्रकाशित से उद्धृत

1. जवापुष्प जावित्री को काली गाय के मूत्र में पीसकर सिर में लेप करने से बाल झड़ने बन्द होकर दृढ़ हो जाते हैं।

2. केसर और काली मिर्च समान भाग लेकर सरसों के तेल में तुण्डीकेरी= का रस डालकर पकायें।

3. गुञ्जा= चिरमटी को शहद में पीसकर सिर में लेप करने से गंजापन शीघ्र ही नष्ट हो जाता है।

4. जातीपुष्प= जायफल का फूल= जावित्री और जड़ एक-एक भाग, पिप्पली दो भाग लेकर काली गाय के मूत्र में पीसकर सिर में लेप करने से सात दिन अथवा पन्द्रह दिन में गंजापन दूर हो जाता है।

सर्वविष की दवा

1. दही, शहद, मक्खन, पिप्पली, सोंठ, काली मिर्च, कुठ और सैंधा नमक, इन आठ चीजों को मिलाकर सेवन करने से भयंकर सर्प का विष भी दूर हो जाता है।

2. सफेद फूल की अपराजिता की जड़ पानी में पीसकर नाक में टपकाने से सर्पविष दूर हो जाता है।

3. कटुकी और काली मूसली को पीस कर पानी के साथ पीने से सर्पविष दूर हो जाता है।

4. बावची के चूर्ण को गोमूत्रकी एक भावना देकर रखलें। इसके सेवन से जड़ और जंगम दोनों प्रकार के विष दूर हो जाते हैं।

5. हल्दी को गोमूत्र अथवा मनुष्य के मूत्र अथवा दस वर्ष पुराने गोघृत के साथ पीने से सभी प्रकार के विष नष्ट हो जाते हैं।

6. यदि सर्पविष सारे शरीर में फैल गया हो तो गोदुग्ध में हल्दी पकाकर पीने से सर्पविष दूर हो जायेगा।

7. हल्दी और कुठ को गोदुग्ध में पकाकर पीने से सर्पविष दूर होता है। अथवा हल्दी, कुठ, शहद और घी को मिलाकर पीने से भी सर्पविष दूर होता है।

8. कटुकी और जामुन की जड़ की छाल खट्टी छाछ अथवा पानी से पिला दें, उससे वमन होकर विष निकल जायेगा।

9. केशर, लाख, लोध, मैनसिल और गोरोचन को पीसकर इनकी गोली बना लें अथवा इनका लेप करने से स्थावर-जंगम दोनों प्रकार के विष दूर हो जाते हैं।

10. पिप्पली, काली मिर्च, कुठ, रसोईघर के धुआं से बना जाला, मैनसिल, हरताल और सरसों को सफेद गाय के दूध में पीसकर गोली बना लें। इस गोली को पानी में घिसकर आंखों में अंजन करने स, नाक में नस्य देने से, पीने से और

लेपन करने से भी विष दूर हो जाता है।

11. अपराजिता की जड़ का चूर्ण घी से सेवन करें तो चमड़ी तक पहुंचे हुए विष को दूर करता है। दूध से लेने पर रक्त में मिले हुए विष को, कुठ के चूर्ण के साथ देने से मांस तक गये हुए विष को, बेदाना के साथ लेने पर चर्बी तक पहुचे हुए विष को, पिपली चूर्ण के साथ लेने पर मज्जा तक गये हुए विष को तथा चण्डालीकन्द के साथ अपराजितामूल चूर्ण को लेने से वीर्य तक पहुंचे हुए विष को दूर कर देता है।

12. विष का अधिक प्रभाव हो जाने पर रोगी को पानी में डाले रहें।

12. नीम और मसूर के पत्ते खाते रहने से भी विष दूर होता है।

पागल कुत्ता काटने पर

1. गुड़, तेल और आक के दूध को मिलाकर लेप करदें।

2. घृतकुमारी=गवारपाठा के पत्ते का गूदा और सैंधा नमक दोनों को पीसकर थोड़ा-सा गर्म करके काटे हुए स्थान पर बांध दे, तीन दिन तक इसी प्रकार बांधने से विष दूर हो जायेगा।।

दृष्टिवर्धक दवा

1. सफेद सांठी की जड़ को घी के साथ पीसकर अंजन की भांति लगाने से दृष्टि बढती है और आखों से पानी आने को रोकता है। उक्त सांठी की जड़ को दारुहल्दी के साथ पीसकर सुर्मे की भांति लगाने से नेत्रज्योति बढती है।।

बहरेपन की दवा

1. दशमूल के कल्क को तैल में पकालें, यह तैल बहरापन को ठीक कर देता है।

2. शुद्ध मैनसिल, अपामार्ग की जड़ का चूर्ण और मधु मिलाकर एक तोला सेवन करने से बहरापन नष्ट होता है।

3. लहसुन, आंवला, हरताल समभाग लेकर इनसे चार गुणा तैल और तैल से चार गुणा गोदुग्ध लेकर पकायें।

4. असगन्ध, वच, कुठ और गजपीपल समान भाग लेकर भैंस के मक्खन में मिलाकर कान के पास लेप करने से श्रवण शक्ति बढती है।

दांत की दवा

1. ताम्बे के पात्र में हरड़ के चूर्ण को थोड़ा सा पकाकर शहद के साथ गोली बनाकर दान्तों में रखने से दतों के कीड़े मर जाते हैं।

2. दांत के कीड़े मारने हेतु थोहर की जड़ को दांतों से चबावे। अथवा कसीस को घी में पकाकर दांतों पर लगावे।

3. जायफल अथवा कालीमिर्च प्रातः काल उठते ही दांतों से चबावे तो हिलते हुए दांत दृढ़ हो जायें अथवा इनकी दातुन करे।

4. मौलसरी की दातुन से दांत दृढ होते हैं। मौसलरी के बीजों का चूर्ण थोड़े से गर्म पानी में मुख में रखलें, पुनः निकाल दें, इस प्रक्रिया से दांत दृढ हो जाते हैं।

5. मौलसरी की छाल को पानी में पकाकर गर्म-गर्म पानी मुख में रखे, सात दिन तक इस प्रकार करने से दांत दृढ हो जायेंगे।

www.thearyasamaj.org

वाणी से विष और अमृत

वाणी ही विष घोले और वाणी ने रस बरसाया है।
वाणी ने ही मानव का जग में, जीवन नर्क बनाया है।।
वाणी ही मानव को, जग में सफल बनादे,
आपस के मतभेद मिटा, फिर से गले लगादे,
शत्रु मित्र बन जाते, जन्म का वैर मिटादे,
प्रेम रस बरसा कर, जीवन को स्वर्ग बना दे,
वाणी ने ही इस जगत् में महासंग्राम मचाया है। 1। वाणी ही..........
शिशुपाल ने वाणी से ही, श्री कृष्ण को भड़काया,
एक सौ एक गालियां देकर, अपना सिर कटवाया,
वाणी से ही द्रौपदी ने, दुर्योधन को उकसाया,
प्रतिशोध की अग्नि में, यदुकुल का हुआ सफाया,
वाणी से श्रीराम ने, परशुराम को शान्त कराया है। 2। वाणी ही..........
वाणी के कारण ही मानव, जग में आदर पाता है,
छाप छोड़ दे अपनी वह, जहां जहां भी जाता है,
वाणी के कारण ही मानव, दर दर ठोकर खाता है,
नहीं पास बैठता उसके कोई, जीवन में दुःख पाता है,
वाणी ने ही मानव जीवन में, गहरा दाग लगाया है। 3। वाणी ही..........
वाणी से मानव की, पहचान जगत् में होती है,
मधुर और सच्ची वाणी की आन जगत् में होती है,
वाणी से विद्वान् पुरुष की शान जगत् में होती है,
मूर्ख और अज्ञानी की भी, पहचान जगत् में होती है,
तलवार का घाव भर जाता, घाव वाणी का नहीं भर पाया। 4। वाणी ही..........
चुगलखोर अपनी वाणी से पानी में आग लगादे,
श्रेष्ठ नरपुंगव वाणी से जलती आग बुझादे,
मां जाए भाइयों का भी, जीवन भर वैर बढ़ादे,
जहर घोल दे जीवन में, सिर फुटौवल करादे,
वाणी ने ही पति-पत्नी का आपस में तलाक कराया है। 5। वाणी ही..........
वाणी है वरदान ईश्वर का, सब मिट्ठी वाणी बोलो,
कुछ कहने से पहले वाणी को, मन के भीतर तोलो,
बिना विचारे जबान चलाकर, नाहक विष मत घोलो,
संयम में रह करके, कम से कम वाणी बोलो,
ऋषि मुनियों ने मधुरवाणी से सर्वत्र अमृत बरसाया है। 6। वाणी ही..........
बिना सोचे वाणी से नेता, शोशेबाजी करते हैं,
मनचाही लफ्फेबाजी से, निम्न स्तर पर गिरते हैं,
स्वच्छन्द जबान फिसल जाने पर, प्रायश्चित फिर करते हैं,
बोले पीछे होश आने पर, कथन से सब मुकरते हैं,
कुछ पूर्वाग्रही द्रंभी नेताओं ने, यह अपना लक्ष्य बनाया है। 7। वाणी ही..........
वाणी से ऋषि दयानन्द ने वेदामृत बरसाया,
अंधविश्वास पाखंड ढोंग का जड़ से किया सफाया,
वाणी से महर्षि ने विरोधियों पर प्रभाव जमाया,
वाणी से ही शास्त्रार्थों में दिग्गजों को परास्त कराया,
वाणी से ही महर्षि ने व्यसनी अमीचन्द को भक्त बनाया है। 8। वाणी ही..........

-देशराजआर्य
पूर्व प्रधानाचार्य-9416337609

www.thearyasamaj.org

गुरुकुलीय क्रीडा प्रतियोगिता सम्पन्न

महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर के ब्रह्मचारियों की अन्तः क्रीडा प्रतियोगिता दशहरा के उपलक्ष्य में 11 से 13 अक्टूबर तक गुरुकुल झज्जर में की गई। इस प्रतियोगिता में गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने उत्साह और हर्षपूर्वक भाग लिया।

आचार्य विजयपाल योगार्थी, स्वामी शुद्धबोध, अशोक शास्त्री, महावीर शास्त्री, नन्दलाल शास्त्री, अरविन्द शास्त्री, रमेश शास्त्री और ऋतेश शास्त्री, नरेश शास्त्री ने विविध क्रीडाओं का सञ्चालन किया। कुश्ती, कबड्डी, दौड़, आसन, मल्लखम्भ, रस्साकसी, बालीबाल, खो-खो आदि खेलों में प्रथम-द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले ब्रह्मचारियों की सूची इस प्रकार है-

1. कुश्ती-62 किलो भार से ऊपर सभी

प्रथम- ब्र० अरुण सिलानी
द्वितीय- ब्र० तरुण रोहतक
तृतीय- ब्र० रवि नागर

2. कुश्ती 57 से 62 किलो तक

प्रथम- ब्र० अमित खेवड़ा
द्वितीय- ब्र० सुनील शीशवाला
तृतीय- ब्र० राजपाल

3. कुश्ती 52 से 57 किलो तक

प्रथम- ब्र० अमित खेवड़ा
द्वितीय- ब्र० आकाश दिल्ली
तृतीय- ब्र० धनसिंह

4. कुश्ती 78 से 52 किलो तक

प्रथम- ब्र० शिवम् पुन्हाना
द्वितीय- ब्र० नरवीर आर्य
तृतीय- ब्र० आयुष आर्य

5. कुश्ती 44 से 48 किलो तक

प्रथम- ब्र० मोहित दातौली
द्वितीय- ब्र० पुनीत पिचोपा
तृतीय- ब्र० हिमांशु भम्भेवा

6. कुश्ती 40 से 44 किलो तक

प्रथम- ब्र० अमनदीप दिल्ली
द्वितीय- ब्र० हर्ष नांगल
तृतीय- ब्र० कुलदीप

7. कुश्ती 36 से 40 किलो तक

प्रथम- ब्र० गगनजीत
द्वितीय- ब्र० उमेश मोहन
तृतीय- ब्र० राहुल कोथकलाँ

8. कुश्ती 32 से 36 किलो तक

प्रथम- ब्र० अनिकेत भोजावास
द्वितीय- ब्र० सूरज रोहतक
तृतीय- ब्र० जयवीर झोझूकलाँ

9. कुश्ती 28 से 32 किलो तक

प्रथम- ब्र० आशीष बराहणा
द्वितीय- ब्र० नितिन रामपुरा
तृतीय- ब्र० सन्दीप ग्वालिसन

10. कुश्ती 26 से 28 किलो तक

प्रथम- ब्र० यशवीर आसाम
द्वितीय- ब्र० मनीष नांगलोई
तृतीय- ब्र० पवन चोरोली

11. कुश्ती 1 से 26 किलो तक बालवर्ग

प्रथम- ब्र० सचिन गुड़गांव
द्वितीय- ब्र० भुवन भास्कर
तृतीय- ब्र० मोहित पिलोद

www.thearyasamaj.org

12. बड़ी कबड्डी-

प्रथमवर्ग- 50 कि० ब्र० तरुण आर्य रोहतक

द्वितीयवर्ग- 35 से 50 कि० ब्र० मोहित दातौली का वर्ग विजयी

तृतीय वर्ग- 1 से 35 कि० तक ब्र० आशीष बराहणा का वर्ग विजयी रहा

13. छोटी कबड्डी-

प्रथमवर्ग- 50 कि० से ऊपर ब्र० ललित आर्य चरखी 50 कि० से ऊपर

द्वितीयवर्ग- 35 से 50 कि० तक ब्र० मोहित दातौली का वर्ग विजयी

तृतीय वर्ग- 2 से 35 कि० तक ब्र० आशीष बराहणा का वर्ग विजयी

14. रस्साकसी-

प्रथमवर्ग- ब्र० मोहित दात्तौली का वर्ग विजयी

द्वितीयवर्ग- ब्र० आशीष बराहणा का वर्ग विजयी

तृतीयवर्ग- ब्र० आशीष बराहणा का वर्ग विजयी

15. बालीबाल-

प्रथमवर्ग- ब्र० तरुण आर्य का वर्ग विजयी

16. आसन-

प्रथमवर्ग

प्रथम- ब्र० आकाश

द्वितीय- ब्र० ललित चरखी

तृतीय- ब्र० अरुण सिलानी

ब्र० तरुण रोहतक

द्वितीयवर्ग

प्रथम- ब्र० चेतन

द्वितीय- ब्र० प्रवीण

तृतीय- ब्र० संजीत सिलानी

तृतीयवर्ग

प्रथम- ब्र० मनीष नांगलोई

द्वितीय- ब्र० सन्नी दिल्ली

तृतीय- ब्र० अभिषेक आँवल

ब्र० मोहित पिलोद

17. मल्लखम्भ-

प्रथमवर्ग

प्रथम- ब्र० राजपाल

द्वितीय- ब्र० अमित खेवड़ा

तृतीय- ब्र० अरुण सिलानी

द्वितीयवर्ग

प्रथम- ब्र० गगनजीत

द्वितीय- ब्र० प्रवीण बन्धवाड़ी

तृतीय- ब्र० महेश अलाउद्दीनपुर

तृतीयवर्ग

प्रथम- ब्र० यशवीर आसाम

द्वितीय- सन्नी आर्य

तृतीय- सन्दीप

18. दौड़ 5000 मीटर-

प्रथम- ब्र० प्रवीण बन्धवाड़ी

द्वितीय- ब्र० कमल नजफगढ़

तृतीय- ब्र० ललित चरखी

दौड़ 1500 मीटर-

प्रथम- ब्र० प्रवीण बन्धवाड़ी

द्वितीय- ब्र० कमल नजफगढ़

तृतीय- ब्र० नेमसिंह

दौड़ 800 मी० प्रथमवर्ग-

प्रथम- ब्र० नेमसिंह मथुरा

द्वितीय- ब्र० मोहित

www.thearyasamaj.org

तृतीय– ब्र० ललित चरखी

दौड़ 800 मी० द्वितीयवर्ग–

प्रथम– ब्र० प्रवीण आर्य

द्वितीय– ब्र० संजीत सिवाना

तृतीय– ब्र० हर्ष नांगल

19. दौड़ 200 मी० प्रथमवर्ग–

प्रथम– ब्र० नेमसिंह

द्वितीय– ब्र० मोहित मा०

तृतीय– ब्र० तरुण रोहतक

दौड़ 200 मी० द्वितीयवर्ग–

प्रथम– ब्र० प्रवीण बन्धवाड़ी

द्वितीय– ब्र० संजीत सिवाना

तृतीय– ब्र० मोहित दातौली

दौड़ 200 मी० तृतीयवर्ग–

प्रथम– ब्र० अभिषेक आंवल

द्वितीय– ब्र० नमन दिल्ली

तृतीय– ब्र० संदीप गवालिसन

दौड़ 100 मी० प्रथमवर्ग–

प्रथम– ब्र० नेमसिंह

द्वितीय– ब्र० मोहित मा०

तृतीय– ब्र० तरुण रो०

दौड़ 100 मी० द्वितीयवर्ग–

प्रथम– ब्र० प्रवीण ब०

द्वितीय– ब्र० संजीत सि०

तृतीय– ब्र० मोहित दा०

दौड़ 100 मी० तृतीयवर्ग–

प्रथम– ब्र० आशीष ब०

द्वितीय– ब्र० संजीत खा०

तृतीय– ब्र० सूरज रोहतक

20. खो-खो

प्रथमवर्ग– ब्र० तरुण रोहतक का वर्ग विजयी

द्वितीयवर्ग– ब्र० संजीत सिवाना का वर्ग विजयी

तृतीयवर्ग– ब्र० आशीषबराही का वर्ग विजयी

21. ऊँची कूद प्रथमवर्ग 50 कि० से ऊपर–

प्रथम– ब्र० तरुण रोहतक

द्वितीय– ब्र० धनसिंह म०

तृतीय– ब्र० ललित चरखी० आकाश दिल्ली

द्वितीयवर्ग 35 से 50 किलो–

प्रथम– ब्र० संजीत सिवाना

द्वितीय– ब्र० रोहित निलोठी

तृतीय– ब्र० खुशाल गुरुग्राम

तृतीयवर्ग 1 से 35 किलो तक–

प्रथम– ब्र० निशान्त गढ़ी

द्वितीय– ब्र० आशीष बराहणा

तृतीय– ब्र० लोकेश आर्य

22. लम्बी कूद प्रथमवर्ग 50 कि० से ऊपर–

प्रथम– ब्र० तेजवीर

द्वितीय– ब्र० राहुल महरामपुर

तृतीय– ब्र० नेमसिंह

द्वितीयवर्ग 35 से 50 कि० तक

प्रथम– ब्र० प्रवीण बन्धवाड़ी

द्वितीय– ब्र० संजीत सिवाना

तृतीय– ब्र० मोहित दातौली

तृतीयवर्ग 1 से 35 किलो तक–

प्रथम– ब्र० सूरज रोहतक

द्वितीय– ब्र० नमन आर्य

तृतीय– ब्र० सोनू आर्य

23. भारोत्तोलन प्रथम वर्ग–

प्रथम– ब्र० तेजवीर आर्य

द्वितीय– ब्र० अरुण खिलानी

तृतीय– ब्र० अमन, राहुल आर्य

गुरुकुल कांगड़ी के संस्थापक अमर शहीद आर्य नेता, राजर्षि

स्वामी श्रद्धानन्द के संस्मरण

-आनन्ददेव शास्त्री, आर्य नगर, झज्जर

एक दिन स्वामी श्रद्धानन्द जी कुछ ब्रह्मचारियों के साथ कनखल होते हुये हरिद्वार जा रहे थे। मार्ग में शिक्षाप्रद कहानियां भी सुनाते हुये जा रहे थे, तभी वे सडक की दांई तरफ देखकर एक दम रुके। तभी एक छात्र ने स्वामीजी से पूछा कि आप रुक क्यों गये? तब स्वामी जी की आंखें सजल हुई तथा फिर मुस्करा कर चल पडे। छात्र के प्रश्न पर स्वामी जी गम्भीर हो गये तथा कुछ रुककर फिर बोले-देखो सडक के किनारे पर झोपडियां बनी हैं, इनके आगे एक घोडा गाडी खडी है। इन झोपडियों में वेश्याएं रहती हैं। घोडा गाडी में कोई रईस अपना चरित्र नष्ट करने के लिये आया हुआ है। इसे देखकर मुझे अपना पिछला जीवन याद आ गया। उसी मलिन जीवन को याद करके मुझे रोना आ गया। तुमने पूछा कि मैं क्यों मुस्कराया? इसका उत्तर है कि मुझ लोहे का दयानन्द रूपी पारसमणि से संपर्क हुआ तथा मेरे जीवन में यह परिवर्तन आया।

गुरुकुल कांगडी स्थापित हुये अभी कुछ ही दिन हुये थे। 20-25 लडके फूस की कच्ची झोपडियों में रहते थे। चारों तरफ घना जंगल था। जिसमें हिंसक पशु बहुतायत से रहते थे। छुट्टी का दिन था। पं० विष्णुमित्र जी लडकों को लेकर पास ही बहने वाली गंगा की धारा के किनारे भ्रमणार्थ गये थे। लडके गंगा के तट पर रेत में बैठकर गीली रेत से मन्दिर पहाड आदि बनाकर खेल रहे थे। तभी अचानक एक शेर जंगल में से प्यास बुझाने गंगा तट पर आ निकला। लड़के तथा पण्डित जी दोनों शेर को अपनी तरफ आता देखकर बुरी तरह घबरा गये। पंडित जी सोचने लगे यदि शेर ने किसी बच्चे का खालिया तो गुरुकुल चलाना कठिन हो जायेगा। बच्चे शेर को देखकर बुरी तरह चिल्ला रहे थे। पंडित जी बच्चों के आगे किंकर्तव्यमूढ खडे थे। तभी दैवीय प्रेरणा से वहां स्वामी जी आ निकले। स्वामी जी ने पंडित जी से कहा आप बच्चों को सम्भालें मैं शेर से निपटता हूं। तभी स्वामी जी ने अपने शिर पर से पगडी उतारी तथा उसके एक सिरे पर पत्थर बांधकर उसे शेर के आगे घुमाने लगे। उसे देखकर शेर घबरा गया तथा दहाड़ता हुआ जंगल की तरफ भाग गया।

गुरुकुल कांगडी को स्थापित हुई कई वर्ष बीत चुके थे। छात्रों के लिये पक्के भवन बन चुके थे। स्वामी जी गंगातट पर बने अपने बंगले में रहा करते। स्वामी जी ने छात्रों को कह रक्खा था कि यदि किसी छात्र को शिकायत हो तो वह 9 बजे के बाद मुझ से मिल लिया करे। एक दिन वे अपनी मेज के सामने बैठे कुछ पढ रहे थे। उन्होंने देखा कोई दरवाजे पर लटकी चिक को हटाकर अन्दर आना चाहता है, पर चिक उठ नहीं रही। स्वामी जी ने ऊंचे स्वर में कहा-''कौन है भाई चिक को एक तरफ सरकाकर अन्दर आजावो''। पर वहां कोई छात्र न था, अपितु चिक को धकेलकर एक शेर कमरे में आ घुसा। शेर से चार आंखें होने पर स्वामी जी ने मेज के नीचे रक्खी रद्दी कागजों की बाल्टी शेर के सिर पर दे मारी। फटे कागजों की वर्षा से डर कर शेर वापिस भाग गया। भागते समय चिक उसके सिर में फंस गई थी। शेर चिक सहित जंगल

www.thearyasamaj.org

में भाग गया।

स्वामी जी ब्रह्मचारियों को भी निर्भय बनने का उपदेश देते थे। गुरुकुल के आसपास के जंगलों में तथा पहाड़ पर शेर, चीता, भालू, हाथी आदि अनेक प्रकार के जानवर बहुतायत में रहते थे। परन्तु उन्होंने कभी भी ब्रह्मचारियों को जंगल में जाने से नहीं रोका। इसी का यह परिणाम था कि गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने दो जंगली शेरों को हाकी से मार डाला था। तथा वे एक बार तो जंगली हाथियों को भगाकर उनका एक बच्चा भी पकड़ लाये थे।

रात के लगभग साढे बारह बजे थे। गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी की रोगी के साथ डयूटी लगी थी। तभी रोगी का उल्टी करने का मन हुआ। डयूटी वाला चिलमची उठाने लगा तो वह पहले से ही उल्टी होने लगी। तभी स्वामी जी वहां आनिकले तथा रोगी की उल्टी अपनी अंजली में रोकने लगे। इतने में डयूटी वाला ब्रह्मचारी भी सफाई कर्मचारी को लेकर आगया। स्वामी जी ने उन दोनों को वापिस भेज दिया तथा हाथों की सफाई के बाद रोगी का सिर दबाने लगे।

उन दिनों बिजनौर जिले में सुल्ताना डाकू का बड़ा आतंक था। लाल ढांग तथा उसके आसपास के क्षेत्र तथा गुरुकुल के आसपास के जंगलों में प्रतिदिन उसके आतंक के समाचार आते रहते थे। उसके आने के समाचार से ही लोग घरों को छोड़ गन्ने के खेतों में जा छिपते थे। उन्हीं दिनों एक पत्र गुरुकुल की पत्र-पेटिका में मिला, जो एक प्रकार से नोटिस ही था। उसमें लिखा था-''कि मैं अमुक तिथि की रात 10-11 बजे के बीच आऊंगा तथा सब माल लूटकर ले जाऊंगा; जो कोई विरोध करेगा उसे गोली से उड़ा दिया जायेगा''। हमारे गिरोह में 80 आदमी हैं। 25 घुड़सवार तथा 40 बन्दूकें हैं''। यह समाचार गुरुकुल में आग की तरह फैल गया। उस समय स्वामी जी की निर्भयता तथा संगठन शक्ति देखने योग्य थी। उन्होंने सब विद्यार्थियों को इकट्ठाकर लाठियां दिलाई। छः-छ, सात-सात के समूह बनाये तथा उन्हें यथोचित स्थान पर नियुक्त किया। हर समूह को खतरे भी सूचना देने के लिये 1-1 सीटी दी गई। गुरुकुल में कुछ बन्दूकें भी थी उनसे भी सहायता ली गई। स्वामी जी स्वयं अपना सोटा लिये अकेले ही कांगडी गांव की तरफ वाली पगडंडी पर गश्त करते थे। क्योंकि इधर से ही डाकू आने का खतरा अधिक था। तीन दिन तक यही प्रबन्ध रहा, किन्तु डाकू नहीं आये। बाद में पहरा हटा लिया गया।

एक दिन स्वामी जी जब छात्रवास के कमरे में घुसे तो उन्होंने देखा कि एक सोये हुये ब्रह्मचारी की छाती पर एक फनियर सांप फन उठाये बैठा है। यदि ब्रह्मचारी जरा भी करवट बदलता तो उसकी जीवन लीला समाप्त हो सकती थी। यह देख स्वामी जी कुछ देर चुपचाप खडे रहे। अन्त में निश्चय कर आगे बढ अपनी लम्बी लाठी सांप पर दे मारी, जिससे सांप नीचे गिर गया तथा कमरे से बाहर भाग गया।

स्वामी जी की विशाल मूर्ति को देखकर वन्य जीव भी भय खाते थे। एक बार एक चीता स्वामी जी के बंगले में आ घुसा। स्वामी जी चुपचाप कुर्सी पर बैठे उसे देखते रहे। चीता बडे कमरे में चक्कर लगाकर बंगले से बाहर निकल गया तथा जंगल में चला गया।

स्वामी जी केवल आर्यसमाज के ही नेता

www.thearyasamaj.org

नहीं थे वे राष्ट्रीय नेता भी थे। इसी कारण तत्कालीन क्रान्तिकारियों के लिये गुरुकुल के द्वार सदा खुले रहते थे। जब किसी क्रान्तिकारी को छिपने की आवश्यकता होती तो वह निर्जन वन में स्थित इस संस्था को निर्बाध मान कर यहां चला आता था। लाला हरदयाल कई मास तक गुरुकुल में रहे। इसी प्रकार राजेन्द्र लाहिडी, गोन्दालाल दीक्षित, यशपाल (जो बाद में प्रसिद्ध उपन्यासकार बने), भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद, कृष्णसिंह बारहट (राजस्थान) आदि यथेष्ट काल तक सुरक्षापूर्वक कुलभूमि (पुण्यभूमि) गंगापार निवास करते रहे। वहां रहते उनका बाल भी बांका न हुआ।

सम्पादकीय टिप्पणी......

हिन्दू से मुसलमान बने लोगों को पुनः हिन्दू धर्म में लाने का कार्यक्रम स्वामीजी ने चलाया हुआ था। इस कार्य को गांधी जी भी अनुचित मानते थे। इसीलिये मुसलमानों द्वारा भड़काने के कारण 23 दिसम्बर 1926 को अब्दुलरशीद नामक एक मतान्ध मुसलमान ने दिल्ली के नया बाजार स्थित आवास में स्वामी श्रद्धानन्द जी को गोली मार कर शहीद कर दिया। इस मुसलमान को गांधी जी ने अपना भाई कहकर सम्मान दिया था। स्वामी श्रद्धानन्दजी ने गांधी को महात्मा की उपाधि दी, वही गांधी श्रद्धानन्द जी के हत्यारे की निन्दा न करके उसे अपना भा॰ बताने में हिन्दू मुस्लिम एकता की कल्पना करता है। मुस्लिम तुष्टीकरण के इसी प्रकार के अनेक कार्य गांधीके जीवन में देखे जा सकते हैं। यह विडम्बना ही है कि ऐसा व्यक्ति बीस पैसे से लेकर एक हजार रुपये तक की भारतीय मुद्राओं पर भी छाया हुआ है। क्या भारत में ऐसा और कोई महापुरुष नहीं हुआ जो मुद्राओं पर स्थान पाने का अधिकारी हो। परन्तु राजनीति ऐसी कुटिल गति वाली होती है कि भीतर से न चाहते हुए भी लोग अयोग्य व्यक्ति के प्रति श्रद्धा दिखाने में विवश हो जाया करते हैं और उसकी आड़ में देश के निरपराधजनों के संहार में कारण बने व्यक्ति को भी पूज्य बनाने में संकोच अनुभव नहीं करते। सरकार जनता के लिए पितृवत् होती है। उसे सबके सामने सच्चाई रख देनी चाहिये। सच्चा इतिहास वही है जो तथ्यों को छुपाये बिना वर्णन कर सके। किसी व्यक्ति को अपने स्वार्थ की पूर्ति हेतु अनावश्यक महिमा मण्डित करना श्रेयस्कर नहीं होता। तत्कालीन प्रत्यक्षद्रष्टा लोगों के कथन को भी ध्यानमें रखा जाना चाहिये। जैसे भारत गांधी नेहरू की छाया में, देश की हत्या तथा नत्थूराम गोडसे के बयान। इस देश की स्वतन्त्रता हेतु हजारों व्यक्तियों का खून बहा है उन्हें दृष्टि से ओझल करके लगातार एक ही व्यक्ति को सर्वोच्च स्थान देते रहना उन शहीदों के प्रति कृतघ्नता है। अतः भारत की वर्तमान तथा भावी पीढी को सच्चे इतिहास की जानकारी अवश्य देनी चाहिये जिससे वे जान सकें कि भारत में होने वाले आतंकी हमले का मूल कारण क्या है। जो व्यक्ति सत्यासत्य का पक्षपात रहित होकर वर्णन करने वाले ग्रन्थ को घोर निराशाजनक मानकर उसे आर्यसमाज की बाइबल मानता हो, उस व्यक्ति को भारत का सिरमौर माना जाये यह किस सीमा तक उचित है। मेरे कथन को लाखों जन अन्तस्तल से सत्य मानते हुए भी कारणवश चुप रहने में अपना भला मानते हैं, यह मैं प्रत्यक्ष अनुभव कर रहा हूं। क्योंकि उन्हें सत्ता से जुड़े रहना लाभप्रद दीखता है। नीतिकार कहते हैं-**वारांगनेव नृपनीतिरनेकरूपा।**

www.thearyasamaj.org

काकोरी के अमर शहीद, क्रान्तिकारी नेता-

पं० रामप्रसाद बिस्मिल

-यशपाल

ग्वालियर राज्य में तोमर घाट में चम्बल नदी के किनारे बिस्मिल के दादा रहते थे। वे शाहजहांपुर में आकर रहने लगे। वहीं उनके पुत्र मुरलीधर के घर में ज्येष्ठ शुक्ला 11 सम्वत् 1954 में एक बालक ने जन्म लिया, उस बालक का नाम ''रामप्रसाद'' रखा गया। जब आठ वर्ष के हुए तब आपको पिता जी ने हिन्दी के सामान्य अक्षरों का ज्ञान कराया, उर्दू पढ़ाने के लिए एक मौलवी साहब के पास भेजते थे। रामप्रसाद बाल्यकाल में बहुत उद्दण्ड थे, थोड़े दिन के बाद पैसों की चोरी भी करने लग गये तथा उपन्यास ग्रन्थ उन पैसों से खरीद खरीद कर पढ़ा करते थे, भांग भी पीने लग गये। एक दिन की बात है भांग पीकर सन्दूक से पैसे निकाल रहे थे, बेहोशी के कारण ट्रंक की आवाज होगई। माता जी ने उस आवाज को सुन लिया। उस दिन आप चोरी करते हुए पकड़े गये और बहुत से रुपये तथा उपन्यासों की पुस्तकें प्राप्त हुई। उस दिन आपको बहुत दण्ड दिया गया।

एक दिन आपके गाँव में आर्यसमाज के स्वामी सोमदेव जो आये। उनके पास आपका आना जाना होने लगा। आपके जीवन ने पलटा खाया, आप आर्यसमाजी बन गये और ब्रह्मचर्य का पालन करने लगे। कुछ दिनों में आपने सब दुर्व्यसनों को छोड़ दिया। महात्मा, संन्यासियों के उपदेश रुचि से सुनने लग गये। इससे देश सेवा का भाव मन में उत्पन्न हो गया, और देश सेवा का व्रत ले लिया, तब से शरीर को सुदृढ़ बनाने का प्रयत्न करने लग गये। प्रतिदिन नियमपूर्वक व्यायाम, यज्ञ करते थे, इसके फलस्वरूप आप थोड़े ही दिनों में असाधारण शक्तिशाली हो गये। साठ-साठ मील पैदल चले जाते थे, तब भी हिम्मत न हारते थे। व्यायाम और प्राणायाम इतना करते थे कि देखने वाले दंग रह जाते थे और व्याख्यान बहुत जोशीला दिया करते थे। जब आप अंग्रेजी की नवीं कक्षा में पढ़ते थे तब कुछ स्वदेशी पुस्तकों का अवलोकन किया, उससे स्वदेश प्रेम उत्पन्न हुआ। शाहजहाँपुर में सेवा समिति की नींव पं० श्रीराम बाजपेयी जी ने डाली। उसमें ये बड़े उत्साह से काम करते थे। आपके हृदय में दूसरों के प्रति सेवा का भाव उत्पन्न हुआ, समझने लग गये कि वास्तव में देशवासी बड़े दुखी हैं, उसी वर्ष कांग्रेस का उत्सव था, ये भी उसमें सम्मिलित हुए। उसमें निश्चय हुआ कि देश के लिये विशेष कार्य होना चाहिये। भारतवासियों के दु:ख तथा दुर्दशा की जिम्मेवारी गवर्नमेंट पर है। अत एव सरकार को पलटना चाहिये, आपने भी इन विचारों का अनुमोदन किया। कांग्रेस के उत्सव में महात्मा तिलक के पधारने की खबर थी, इस कारण गर्म-दल के व्यक्ति भी आये हुए थे। कांग्रेस के सभापति का स्वागत बड़ी धूमधाम से हुआ। दूसरे दिन लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की स्पेशल गाड़ी आने का समाचार मिला, बहुत जनता वहाँ पर

www.thearyasamaj.org

विद्यमान थी। स्वागत कारिणी समिति के सदस्यों ने निश्चय किया कि शहर में उनकी सवारी न निकाली जाये, जिसका कारण यह था कि वे जानते थे कि उनका स्वागत कांग्रेस के प्रधान से भी अधिक होगा, तब रामप्रसाद जी से तथा उनके साथियों से यह सहन न हो सका, सबने मिलकर निश्चय किया कि उनकी सवारी शहर में से निकाली जायेगी। जब वे स्टेशन पर आये तब उन्हें मोटर में बिठाकर शहर से बाहर ही ले जाना चाहते थे तो रामप्रसाद जी तथा उनके साथी गाड़ी के आगे लेट गये। बहुत कहने पर भी वे न माने, और भी मनुष्य गाड़ी के आगे लेट गये। एक युवक ने मोटर का टायर काट दिया और लोकमान्य तिलक को घोड़े की गाड़ी में बिठाकर हाथों से गाड़ी को खींचना शुरू किया। इस प्रकार लोकमान्य का स्वागत बड़ी धूमधाम से हुआ।

कांग्रेस के उत्सव के अवसर पर ज्ञात हुआ कि एक गुप्त समिति है जिसका मुख्य उद्देश्य क्रान्तिकारी आन्दोलन में भाग लेना है। इस बात को सुनकर आप उस समिति के सदस्य बन गये। रुपयों की समिति में आवश्यकता थी तो आपने एक पुस्तक प्रकाशित की, उससे धन प्राप्त किया। पुस्तकें सब बिकने भी न पाईं थीं कि देशवासियों के लिए एक सन्देश प्रकाशित किया और सर्वत्र पर्चे बाँट दिये गये, क्योंकि पं० गेंदालाल जी अपने दल के सहित ग्वालियर में गिरफ्तार हो गये थे। उनको छुड़ाना था। इसको देखकर सरकार ने पुस्तक जब्त कर ली।

आन्दोलन के लिये हथियार चाहियें, हथियारों के लिये रुपये। अब चिन्ता हुई कि पैसे हथियारों के लिये कहाँ से लाये जायें,। इधर-उधर से पैसे बहुत कठिनता से प्राप्त किये तथा उनसे हथियार खरीदे। हथियार भी अच्छे नहीं मिले और पैसे भी अधिक आपसे ले लिये, क्योंकि हथियारों की आप को जानकारी नहीं थी।

एक दिन की बात है कि आपको एक खुफिया पुलिस ने आकर कहा कि आओ मैं बहुत अच्छे हथियार दिलाऊं। उसके साथ चल पड़े, खुफिया पुलिस इन्स्पेक्टर के घर पकड़वाने के लिए ले गया, आपको शंका हुई कि यह कहाँ ले जाता है। जब इन्स्पेक्टर के घर के सामने पहुँचे उस समय इन्स्पेक्टर घर पर न थे, तब आपको किसी से पूछने पर पता चला कि यह घर तो इन्स्पेक्टर का है तब उससे आंख बचाकर चलते बने। फिर अपना रहने का स्थान बदला, तथा जिससे आप हथियार खरीदते थे उसका भी खुफिया पुलिस ने पता चला लिया। उस समय आप लोगों के पास दो राइफलें, चार रिवाल्वर तथा दो पिस्तौल खरीदे हुए मौजूद थे। उस दिन एक मनुष्य हथियार लेकर जाने वाला था। इस बात का खुफिया पुलिस को पता चल गया, उन्होंने सर्वत्र तार कर दिये तथा सारी रेलगाड़ी की तलाशी ली गई, उस दिन आप गिरफ्तार हो जाते परन्तु पुलिसियों की असावधानी के कारण बच गये।

इधर आप अपने काम में व्यस्त थे। मैनपुरी के सदस्य ने एक आदमी से रुपयों की आवश्यकता की पूर्ति के लिये कहा कि आप किसी के यहाँ डाका डलवाओ, उसके मना करने पर, उसने मारने की धमकी दी। उसने पुलिस को सूचना दे दी, मामला खुल गया, मैनपुरी में

गिरफ्तारियां आरम्भ हो गईं। उसमें आपके वारण्ट जारी हो गये। उन्हीं दिनों दिल्ली में कांग्रेस की बैठक होने वाली थी। आपने एक पुस्तक लिखी थी वह यू० पी० सरकार ने ज़ब्त कर ली थी, वहां गये तथा पुस्तकें बेचीं, पुलिस को पता चलने पर पुस्तकें लेकर शाहजहांपुर में आ गये, वहां पर भी पुलिस ने पकड़ना शुरू कर रखा था। शाहजहांपुर से चलकर दूसरे शहर में ठहरे। रात्रि के समय में मालिक ने बाहर से ताला डाल दिया। ग्यारह बजे आपका एक साथी आया। साथी को ताला देखकर सन्देह हो गया। वहां सबके सब दीवार के ऊपर से कूद कर चल दिये। अंधेरी रात थी, आप सब थोड़ी दूर गये थे कि अकस्मात् एक आवाज आयी कि ठहरो, नहीं तो गोली मारते हैं। सबके सब खड़े हो गये, दरोगा तथा सिपाही बन्दूक हाथ में लिये आपके पास आ गये। आपसे पूछा कौन हो, और कहां जा रहे हो? आप ने उत्तर दिया विद्यार्थी हैं, स्टेशन पर जा रहे हैं। दरोगा को शक हुआ क्योंकि गाड़ी पाँच बजे आती थी, तब दो बजे थे। आप सब लोगों के चेहरे पर रौनक देखकर शक जाता रहा, अन्यथा सब उस दिन गिरफ्तार हो जाते।

आप प्रयाग में धर्मशाला में निवास करते थे। वहां पर एक दिन संध्या कर रहे थे तो एक व्यक्ति ने आकर आपके ऊपर तीन वार किये, परन्तु आपको वार न लगे, वार करने वाला, पहले आपका दुश्मन था, परन्तु बीच में मित्रता हो गई थी, आपको इस बात को देखकर बहुत प्रसन्नता हुई कि दो गज के फासले से वार किया, परन्तु आपको न लगा। इसका विचार करके, गद्गद् होकर परमात्मा का स्मरण करने लग गये। प्रसन्नता में आपको मूर्च्छा आ गई, यदि उस समय कोई पास होता तो मृत्युलोक को पहुंचा सकता था।

आपको पता चला कि मैनपुरी में होने वाले षड्यन्त्र के सभी गिरफ्तार छोड़ दिये गये हैं और आपके भी वारण्ट वापिस ले लिये गये। तब आप शाहजहांपुर में आ गये। घोषणा के पश्चात् पुलिस का बड़ा प्रकोप था, कोई मनुष्य आपस में नमस्ते तक न कर सकता था, बात करने की तो बात ही क्या।

इसके पश्चात् आप खेती का काम करने लग गये। खेती आप बहुत अच्छी प्रकार से किया करते थे। काम को देखकर कोई कह नहीं सकता था कि यह शहर का रहने वाला है।

जिनको आप आदर की दृष्टि से देखते थे उन्होंने आपको आकर कहा कि फिर क्रान्तिकारियों का संगठन करें परन्तु आपने मना कर दिया। साथियों के अधिक कहने पर स्वीकार कर लिया। आप को काम यह सौंपा कि दल की देखभाल करें। कुछ मनुष्य दल में खराब भी आ गये। एक ने अपने पास वेश्या ला रखी थी, उसकी ताड़ना की जिससे कि वह रुष्ट हो गया। तभी एक आदमी पकड़ा गया, उसने कइयों के नाम बता दिये, जिससे दल के मनुष्य पकड़े गये। इसी बीच में कुछ महानुभावों ने कुछ नियमादि बनाकर दिखाये, उसमें एक यह भी नियम था कि जो व्यक्ति समिति का काम करे उसे मासिक व्यय समिति की ओर से दिया जाय। आपने इस नियम को अनिवार्य रूप से मानना अस्वीकार कर दिया। आप यहाँ तक सहमत थे कि जो व्यक्ति सर्वप्रकारेण समिति

का काम करे उसको गुजारा मात्र समिति की ओर से दिया जा सकता है। जो व्यक्ति कोई व्यवसाय करते हैं उनको कुछ भी समिति की ओर से न दिया जाये। जब आपने उनके विपरीत नियम न माने तब आपको मारने का षड्यन्त्र रचा गया। आपको वे मार देते परन्तु एक के हृदय में दया आ गई तथा आपके पास आकर मारने के षड्यन्त्र का ज्ञान कराया। उससे आप सतर्क हो गये। आप को इस बात को सुनकर बड़ा दुःख हुआ कि जिनको मैं पिता के समान मानता हूं वे मेरे साथ कैसा षड्यन्त्र कर रहे हैं। आपको मारने में मुख्य तीन आदमी थे।

फिर आप आकर नौकरी करने लग गये, क्योंकि माता-पिता को धन की बड़ी आवश्यकता थी। थोड़े ही दिनों में आपने पिताजी को धन की कमी न रहने दी। फिर आपको पता चला कि संयुक्त प्रान्त में क्रान्ति आरम्भ हो गई है, आप पहले निश्चय कर चुके थे कि मैं क्रान्ति में भाग न लूँगा, परन्तु दिल की आग ने आपको निश्चल न बैठने दिया। आपने फिर क्रान्तिकारियों का एक संगठन बनाया, बहुत आपत्तियाँ आईं, कभी-कभी तो यहाँ तक कि रोटी भी न प्राप्त हुई। रुपयों की बहुत आवश्यकता थी, रुपया कहीं से मिलता न था तो फिर विचार आया कि डकैती की जाय, किसी एक व्यक्ति को दुःख न दिया जाय, अतः सरकारी खजाने पर डकैती की जाये।

उसी समय से आपके अन्दर यह धुन सवार हो गई। डकैती का समय तथा स्थान निश्चित किया, 9 अगस्त 1925 ई० को सन्ध्या के आठ बजे की गाड़ी में दस नवयुवक बैठ गये। गाड़ी हरदोई से लखनऊ जा रही थी। एकाएक काकोरी तथा आलमनगर के बीच में 52 नम्बर खम्बे के पास दूसरे दर्जे से जंजीर खेंची गई, गाड़ी खड़ी हो गई। एकदम दस नवयुवक उतरे और सबको कह दिया कि कोई मुसाफिर गाड़ी से न उतरे, हम सरकारी खजाना लूटेंगे, किसी यात्री को कोई कुछ न कहेगा। दो मनुष्य गाड़ी के दोनों तरफ पहरा देने लग गये, जिससे कोई गाड़ी से न उतरे। साथ-साथ थोड़ी-थोड़ी देर में गोली चलती थी, इधर गार्ड को पिस्तौल दिखाकर कह दिया कि जमीन पर सीधा लेट जा। तिजोरी बाहर निकाली गई, तिजोरी पर घन मारा परन्तु टूटी नहीं। अन्त में अशफाक ने बहुत परिश्रम से उस तिजोरी को तोड़ा, इसी बीच में एक मनुष्य गाड़ी से उतरकर दूसरे डिब्बे में जा रहा था, तो वह गोली का शिकार हो गया। लगभग आध घण्टे के बाद में ये दस मनुष्य धन लेकर चले गये। उस डकैती में बहुत धन प्राप्त हुआ, सारा कर्जा चुका दिया तथा हथियार भी मोल ले लिये, काम अब अति तीव्र वेग से चलने लगा। 25 दिसम्बर को गिरफ्तारियाँ प्रारम्भ हो गईं, 25 दिसम्बर की रात्रि को आप एक मित्र के यहां जा रहे थे, रास्ते में खुफिया पुलिस का सिपाही मिला। आपने उसकी कोई चिन्ता न की, रात्रि को निश्चिन्त होकर सो गये। प्रातःकाल चार बजे शौचादि क्रिया के लिये जा रहे थे, दरवाजे पर बन्दूक के शब्द सुनाई दिये। तभी आप समझ गये कि पुलिस आ गई, दरवाजा खोल दिया, पुलिस अफसर ने आकर आपको गिरफ्तार कर लिया। तलाशी ली गई, दुर्भाग्यवश

www.thearyasamaj.org

एक पत्र भी प्राप्त हो गया, जेल में भेज दिये गये, वहां पर भी खुफिया पुलिस का प्रबन्ध कर दिया गया, आपको चिन्ता इस बात की थी कि कभी क्रान्ति कम न हो जाये, जब कोई मिलने आता था तब आप पूछते थे कि काम ठीक चल रहा है या नहीं ? जेल के अन्दर आपके पास खुफिया पुलिस आती थी, और आपसे जिला कलेक्टर मिले, कहने लगे फाँसी होगी, बचना है तो बयान दे दो। आप उस समय चुप रहे। तत्पश्चात् बात करते-करते कहा 'यदि बंगाल का कुछ 'परिचय देकर बयान दे दो तो आपको थोड़ी सी सजा कर देंगे, तथा 15000) पारितोषिक दिया जावेगा'। परन्तु कुछ न बताया। इसी प्रकार बहुत बार आये परन्तु परेशान होकर चले जाते थे। मुकद्दमा चला, मुकद्दमे में पैसों की आवश्यकता थी, पैसों की बहुत कमी थी, और न ही कोई गवाह बना। उधर पुलिस की अफसर अत्यधिक सहायता करते थे। अन्त में 19 दिसम्बर 1927 को फांसी की आज्ञा सुना दी गई। बहुत प्रयत्न किये गये परन्तु फांसी न हटी।

फांसी से पहले माता पिता तथा उनका छोटा भाई मिलने के लिये गये, माताजी को देखकर बिस्मिल की आंखों में आंसू आ गये। उस समय माता के कहे वे शब्द ध्यान रखने योग्य हैं, ऐसी ही माता इस संसार में हीरा उत्पन्न करके संसार को स्वतन्त्र बनाती हैं। ''मैं तो समझती थी तुमने अपने ऊपर विजय पाई है किन्तु यहां तो तुम्हारी कुछ और ही दशा है। जीवन पर्यन्त देश के लिए आंसू बहाकरअब अन्तिम समय में तुम मेरे लिये रोने बैठे हो, इस कायरता से क्या होगा, तुम्हें वीर की भांति हँसते हुए प्राण देते देखकर मैं अपने आपको धन्य समझूँगी। मुझे गर्व है कि इस गए बीते जमाने में मेरा पुत्र देश की वेदी पर प्राण दे रहा है। मेरा काम तुम्हें पाल कर बड़ा करना था इसके बाद तुम देश की चीज थे और उसी के काम आ गए। मुझे इसमें तनिक भी दुःख नहीं है।'' उत्तर में कहा 'माताजी तुम तो मेरे हृदय को भली-भांति जानती हो। क्या तुम समझती हो कि मैं तुम्हारे लिए रो रहा हूँ अथवा इसलिये रो रहा हूँ कि मुझे कल फांसी हो जायेगी। यदि ऐसा है तो मैं कहूँगा कि तुमने जननी होकर भी मुझे समझ न पाया, मुझे अपनी मृत्यु का तनिक भी दुःख नहीं है। हां यदि घी को आग के पास लाया जायेगा तो उसका पिघलना स्वाभाविक है। बस उसी प्राकृतिक सम्बन्ध से दो चार आंसू आ गए। आपको मैं विश्वास दिलाता हूं कि अपनी मृत्यु से बहुत सन्तुष्ट हूं। इन बातों को सुनकर जेल के सब मनुष्य दंग रह गये।

19 दिसम्बर को प्रातःकाल साढे 6 बजे फांसी है, उसी दिन प्रातःकाल तीन बजे उठते हैं। शौच स्नान आदि नित्य कर्म करके यज्ञ करते हैं, फिर ईश्वर स्तुति करके फाँसी के तख्ते पर यह कहते हुए लटक जाते हैं कि ''मैं ब्रिटिश साम्राज्य का नाश चाहता हूं।''

बिस्मिल जी का यज्ञकुण्ड, चाकू, लाठी, मृगचर्म गुरुकुल झज्जर के संग्रहालय में हैं। स्वामी ओमानन्द जी को ये वस्तुयें बिस्मिलजी की बहन शास्त्री देवी ने दी थी।

-देशभक्तों के बलिदान से साभार

www.thearyasamaj.org

॥ओ३म्॥

स्वामी आत्मानन्द जी महाराज

प्राय: सभी यह मानते हैं कि प्रवृत्ति मार्ग की अपेक्षा निवृत्ति मार्ग श्रेयस्कर एवं उपादेय है। वेद और उपनिषदें इसी मार्ग के असीमसुख का पाठ पढ़ा रहे हैं। किन्तु जिन महापुरुषों ने इस मार्ग का अवलम्बन कर इस अमृत रस का आस्वादन किया है, वे इस संसार के दूषित वायुमण्डल को न सह सके। ऐसे ही महापुरुषों में महातपस्वी आर्य जाति के प्रमाणभूत, सूक्ष्मदर्शी, तलस्पर्शी, महाविद्वान्, योगी, अनेक पुस्तकों के लेखक, वयोवृद्ध, कर्मठ, देवपुरुष श्री स्वामी आत्मानन्द जी महाराज थे। आपका जन्म मेरठ जिले के अन्तर्गत अन्छाड़ ग्राम में श्री पं० दीनदयालु के घर संवत् 1930 विक्रमी तदनुसार 1873 ई० में हुआ। आपका बचपन का नाम मुख्यार था। 14 वर्ष की आयु में आपने मिडल कक्षा पास की। परन्तु पारिवारिक आर्थिक तंगी के कारण आपको पढ़ाई छोड़नी पड़ी और कुछ समय बाद आप एक स्कूल में अध्यापन के कार्य में लग गए, जहाँ लगभग छ: माह तक कार्य किया। निरीक्षक महोदय की प्रेरणा पर आपने अध्यापन कार्य छोड़कर संस्कृत पढ़ने का निश्चय कर लिया। आपने पं० श्री परमानन्द जी से संस्कृत पढ़ना आरम्भ कर दिया जो उस समय मुज्फ्फरनगर में पढ़ाते थे। फिर आप उनके गुरु श्री पं० कन्हैयालाल जी से मेरठ जाकर पढ़ने लगे। जहांआपका नाम मुख्यार से मुक्तिराम रखा गया। फिर आप व्याकरण पढ़ने के लिए बनारस में पं० तिवारी जी जो व्याकरण के अद्वितीय विद्वान् थे, उनके पास रहकर व्याकरण पढ़ने लगे। इसी समय परिजनों ने आपके विवाह की तैयारी की परन्तु विद्यानुरागी आप घर छोड़कर पुन: बनारस आ विराजे। आप विलक्षण प्रतिभा के धनी थे। आपने अनेक पुस्तकों की रचना भी की जिनमें मुख्यत: मनोविज्ञान तथा शिवसकंल्प, आत्म-तरंग, वैदिक गीता और अष्टांग-योग आदि ग्रन्थ मुख्य हैं। 'आपने· संवत्' 1991 में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय कॉलेज के कमीशन के सदस्य बनने पर अपनी रिपोर्ट देते हुए अनेक महत्त्व पूर्ण सुझाव प्रस्तुत किये।

संवत् 1980 में आपने रावलपिण्डी में लालकुर्ती आर्यसमाज की स्थापना की तथा संवत् 1988 में गुरुकुल पोठोहार की शाखा के रूप में गुरुकुल जेहलम की स्थापना की। आप पोठोहार गुरुकुल के आचार्य होते हुऐ भी जेहलम गुरुकुल के कुलपति निर्वाचित हुए। गुरुकुल जेहलम के पास ही 'पातञ्जल योग' आश्रम की स्थापना की जहां आप और आपके साथी योगाभ्यास करते थे। गुरुकुल पोठोहार की स्थापना भी आपने सन् 1949 में हैदराबाद सत्याग्रह की सफलता के बाद की थी जो रावलपिण्डी नगर के पास रावल गाँव में था।

इससे पहले 1939 ई० हैदराबाद सत्याग्रह शुरू होते ही आप हैदराबाद की ओर चल पड़े। आर्यसमाज के नेताओं ने आपको लोगों का अधिनायक बनाकर हैदाबाद भेजा किन्तु आपने नेता बनने की अपेक्षा स्वयं अपने प्रस्थान को नहीं रोका। जब आप सत्याग्रह शिविर में पहुंचे तो स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने हैदराबाद स्टेट और जेलों की दशाओं का निरीक्षण करने के लिए आपसे प्रार्थना की। इस कार्य में आपने बड़ी चतुराई से लोगों को इकट्ठा किया और प्रचार कर स्टेट अधिकारियों को

www.thearyasamaj.org

उल्लू बनाया। सन् 1943 ई० में आपने संन्यास ग्रहणकरने की प्रबल भावना जागृत हुई। वैसे तो आप बहुत वर्षों से संन्यासी बनना चाहते थे। परन्तु आपने 1943 ई० में पत्र लिखकर स्वामी सर्वदानन्द जी को दीक्षा देने के लिए लिखा। दैवयोग से उस समय स्वामी जी बहुत रुग्णावस्था में थे। अतः उन्होंने पत्र लिखकर आज्ञा दी तो आप स्वयं वस्त्र परिवर्तन कर वैशाखी के पवित्र पर्व पर मुक्तिराम से आत्मानन्द बन गये। जुलाई 1945 ई० को आपने श्री दयानन्द भिक्षुमण्डल की स्थापना की। जिसका उद्देश्य प्राचीन संस्कृति और सभ्यता पर प्राण न्यौछावर करने की भावना वाले वीरों को दीक्षित कर उन्हें संसार-क्षेत्र में उतरने के लिए तैयार करना था। इसी बीच सन् 1947 में देशभर में दंगे हुए, भारत का विभाजन हो गया तो आप वहां से भारत आगये तथा अपना प्रचार कार्य और लेखकार्य सम्भाल लिया वैदिक साधन आश्रम रायपुर यमुनानगर (जगाधरी) की स्थापना की। आप वृद्धावस्था में नव युवकों से भी कहीं अधिक उत्साह के साथ विश्व उद्धार के पुनीत कार्य में जुटे रहे। कहना कम करना अधिक के अनुसार आपका आचरण रहा। साथ ही जीवन के अन्तिम उद्देश्य की प्राप्ति के लिए योग साधना में रत रहते थे। वैदिक साधना आश्रम यमुनानगर में ही आपने 15 अक्तूबर 1953 को श्रीमद्दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय की स्थापना कर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की एक बड़ी भारी समस्या का समाधान किया। आप अधिक परिश्रम करने के कारण रक्तचाप रोग की चपेट में आ गये। 1957 में हिन्दी रक्षा सत्याग्रह के सूत्रपात के प्रथम अधिनायक रहे। किन्तु वृद्धावस्था के कारण यह रोग बढ़ता ही गया। चिकित्सा के लिए चार मास तक दिल्ली म रहे। जहां ब्र० गणेशचन्द आपकी सेवा में रहते थे। फिर लगभग छः मास मेरठ में तत्पश्चात् नाहन के सरकारी चिकित्सालय में रहे। लेकिन कोई लाभ न हुआ। उसके बाद एक मास सार्वदेशिक सभा दिल्ली में रहे। परन्तु आपका स्वास्थ्य बिगड़ता ही गया 1960 में श्रावणी वेद सप्ताह के दिनों में आपको पक्षाघात हो गया। जो वैद्य रामलाल यमुनानगर की दवा से ठीक हो गया। इसी समय जलवायु परिवर्तनार्थ आचार्य भगवान्देव जी आपको 19 अक्टूबर दीपावली के दिन गुरुकुल झज्जर ले आये। यहाँ आकर कुछ लाभ हुआ। किन्तु अचानक 27 नवम्बर को आपको सुबह फिर पक्षाघात हो गया और आप रोगशय्या पर से फिर उठ न सके। बारह दिसम्बर 1960 के दिन ईश्वर की व्यवस्था के अनुसार समस्त आर्यजगत् को शोक निमग्न कर गए। गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने सेवा कार्य में कोई कमी न रखी निरन्तर सेवा ओषधी से पक्षाघात का प्रभाव भी निरन्तर कम हुआ। परन्तु ईश्वरेच्छा को कौन रोक सकता है। इस प्रकार पूज्य स्वामी आत्मानन्द जी महाराज आर्यजगत् को छोड़कर विदा हुए। इनका अन्त्येष्टि संस्कार निगमबोध घाट दिल्ली में किया गया। दस मण घी आचार्य भगवान्देव जी ने इस अन्त्येष्टि पर लगाया। अनभ्रवज्रपात के नाम से कवि मेधाव्रत जी ने इनके बारे में कुछ श्लोक रचकर शोक संवेदना प्रकट की थी। आचार्य भगवान्देव जी ने स्वामी वेदानन्द जी वेदवागीश को प्रेरित करके 'आत्मानन्द जीवन ज्योति' नाम से इनकी जीवनी लिखवाकर गुरुकुल झज्जर से प्रकाशित कराई है।

प्रस्तुत कर्त्ता:-
ब्र० अरुण कुमार
व्यवस्थापक सुधारक

www.thearyasamaj.org

वैदिक चिन्तन शिविर में प्रस्तावित प्रस्ताव

प्रस्ताव-1- दिनांक 28-29 अक्टूबर 2016 को गुरुकुल गौतमनगर नई दिल्ली में आयोजित चिन्तन शिविर में आये हुये आर्यसंन्यासियों एवं वानप्रस्थों ने भारत जैसे धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र में बढ़ते हुए धार्मिक उन्माद, उग्रवाद एवं आतंकवाद पर चिन्ता व्यक्त की तथा सभी धर्मगुरुओं का आह्वान किया कि वे बच्चों व नौजवानों को धर्म के सही स्वरूप की जानकारी दें, जो अहिंसा, सत्य, ईमानदारी, शुद्ध आचरण व त्याग जैसे-शाश्वत मानवीय मूल्यों पर आधारित है।

आर्य संन्यासियों ने इस बात पर खेद व्यक्त किया कि धर्म के नाम पर की जा रही हिंसा से सामान्य लोग धर्म व धार्मिक व्यक्तियों से घृणा करना शुरु कर देते हैं। धर्म का आचरण व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन में सुख व शान्ति की प्राप्ति के लिये होता है। हिंसा एवं आतंक की कार्यवाही करने वाले कैसे अपने आपको किसी धर्म का अनुयायी कह सकते हैं और कैसे कोई धर्म इस प्रकार के बीभत्स कार्यों की अनुमति दे सकता है।

पस्ताव-2- आर्य संन्यासियों की बैठक में देश में जातिगत आधार पर भेदभाव की घटनाओं की निन्दा की तथा सरकार से मांग कि ऐसी घटनाओं में संलग्न व्यक्तियों के विरुद्ध वह कड़ी कार्रवाई करे, साथ ही शैक्षणिक एवं सामाजिक स्तर पर बच्चों, युवाओं एवं समाज के सभी वर्गों में इस विषय पर जागृति पैदा की जाये जिससे कोई भी व्यक्ति जाति के आधार पर किसी के साथ भेदभाव न कर सके। आर्यसंन्यासियों की बैठक में इस बात की ओर भी ध्यान आकृष्ट किया कि जाति प्रथा भारतीय संविधान के विरुद्ध तो है ही साथ ही शास्त्र विरुद्ध भी है। किसी भी शास्त्रीय ग्रन्थ में इसका विधान नहीं है।

प्रस्ताव-3- चिन्तन शिविर में इस बात पर भी चिन्ता व्यक्त की गई कि पुरानी परम्परा के आर्य विद्वान् जो वैदिक सिद्धान्तों के व्याख्याता थे तथा शास्त्रार्थ की बिधा में पारंगत थे, समाप्त होते जा रहे हैं। इस समस्या के समाधान के लिये यह सहमति बनी कि वर्तमान गुरुकुलों में अपने विषयों की जानकारी के साथ-साथ वैदिक सिद्धान्तों के प्रतिपादन तथा शास्त्रार्थ की कला सीखने के लिये विद्यार्थियों को विशेष प्रशिक्षण दिया जाये।

स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी जो 8 गुरुकुलों का संचालन कर रहे हैं, ने गुरुकुल गौतमनगर में अपने छात्रों के लिये इस प्रकार की व्यवस्था बनाने का निर्णय लिया। अन्य गुरुकुलों के आचार्य भी इस प्रकार की व्यवस्था अपनी शिक्षण संस्थाओं में प्रारम्भ कर सकते हैं, अथवा गुरुकुल गौतमनगर में अपने छात्रों को कुछ समय के लिये भेजकर इस व्यवस्था का लाभ उठा सकते हैं।

प्रस्ताव-4- आर्यजगत् में एक बड़ी समस्या है कि संन्यासियों एवं वानप्रस्थों के लिये आर्यसमाज मन्दिरों में ठहरने की व्यवस्था नहीं की जाती है। जिस के कारण आर्यसमाज का प्रचार करने में बाधा पहुँचती है। सार्वदेशिक सभाओं एवं प्रतिनिधि सभाओं/प्रादेशिक सभाओं से अनुरोध किया जाता है कि वे आर्यसमाज में कम से कम 2 कक्ष आर्य संन्यासियों, वानप्रस्थों, नैष्ठिक ब्रह्मचारियों, उपदेशकों के लिये सुरक्षित रखे जायें तथा उनके आकस्मिक आगमन पर उनके ठहरने एवं भोजन आदि की व्यवस्था की जाये। साथ ही दिल्ली के आस-पास एक संन्यासाश्रम बनाने के लिये भी विचार-किया जावे।

प्रस्ताव-5- आर्यसंन्यासियों एवं वानप्रस्थों के दो दिवसीय चिन्तन शिविर में आर्यसमाज की विचारधारा को विद्यार्थियों, युवकों, महिलाओं, ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में प्रचार-प्रसार करने का संकल्प लिया।

संन्यासी अथवा वानप्रस्थ किसी एक क्षेत्र को आधार बनाकर कार्य करेंगे। तथा उनके लिये भजनोपदेशक एवं विद्वान् की व्यवस्था समन्वय

समिति करेगी। यह भी सहमति बनी कि आर्यसमाज की शिक्षण संस्थायें जैसे-गुरुकुल, आर्य महाविद्यालय, आर्य विद्यालय तथा डी.ए.वी. शिक्षण संस्थायें अपने आस-पास के क्षेत्र में वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार के लिए कार्य करें। गुरुकुल अपने आस-पास के 100 ग्रामों में, आर्य महाविद्यालय 20 ग्रामों में, आर्य विद्यालय 5 ग्रामों अथवा यदि शहरी क्षेत्र हो तो कॉलोनियों में प्रचार की व्यवस्था करें। यदि इस कार्य में उन्हें किसी मार्गदर्शन, सहायता की आवश्यकता हो तो उन-उन प्रदेशों की प्रतिनिधि-सभायें/प्रादेशिक सभा उन्हें यह सहायता प्राप्त करायें। यदि कहीं से सहायता नहीं प्राप्त होती है तो समन्वय समिति यह कार्य करेगी।

-संयोजक
समन्वय समिति
गुरुकुल गौतमनगर, नई दिल्ली

आर्य विद्वानों से अनुरोध

ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर टंकारा समाचार का ऋषि बोधांक प्रतिवर्ष प्रकाशित किया जाता है। आगामी बोधोत्सव 23, 26, 25 फरवरी 2017 को 'टंकारा समाचार' का **ऋषि बोधांक** प्रकाशित होगा। आपसे प्रार्थना है कि आप अपने सारगर्भित अप्रकाशित लेख एवं कविता 15 जनवरी 2017 तक भिजवाकर कृतार्थ करें। लेख वेद, स्वामी दयानन्द, योग स्वास्थ्य आदि एवं अन्य जन उपयोगी प्रेरणादायक विषयों पर ही सीमित हों। प्रकाशनार्थ सामग्री टाईप की हुई दो या तीन पृष्ठों से अधिक न हो, तो सुविधाजनक रहेगा। आप प्रकाशनार्थ समाग्री ईमेल tankarasamachar@gmail.com पर ''वॉकमेन चाणक्य' टाईप में कम्पोज करके भी भिजवा सकते हैं।

अजय सहगल, सम्पादक, टंकारा समाचार,
ए-419 डिफेन्स कालोनी, नई दिल्ली-110024
चलभाष नं0 9810035658

निमन्त्रण-पत्र

आप सभी को यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता होगी कि श्रीमद्दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय न्यास 119 गुरुकुल गौतम नगर नई दिल्ली-110049 का **83वां वार्षिकोत्सव एवं 37 वां चतुर्वेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ 27 नवम्बर 2016 रविवार से 18 दिसम्बर रविवार 2016** तक पूर्व वर्षों की भाँति इस वर्ष भी विभिन्न भव्य सम्मेलनों के साथ हर्षोल्लास से सम्पन्न हो रहा है। चतुर्वेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ के ब्रह्मा वेदों के प्रकाण्ड पण्डित डॉ० महावीर (पूर्व कुलपति उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय हरिद्वार) होंगे। महायज्ञ में आर्यजगत् के उच्चकोटि के साधु-संन्यासी, विद्वान्-मनीषी तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

इस अवसर पर आप स्वयं यजमान बनकर दूसरों को प्रेरित कर पुण्य के भागी बनें तथा यज्ञ में दान देकर गुरुकुल की सहायता कर कृतार्थ करें। आपके द्वारा दिया गया दान आयकर की धारा 80 जी के अन्तर्गत छूट प्राप्त है।

आप सभी अपने इष्ट मित्रों एवं पारिवारिकजनों के साथ पधार कर धर्म लाभ प्राप्त करें।

निवेदकः-
स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती
एवं समस्त अधिकारी व सदस्य, वेदार्ष-न्यास

सम्पर्क सूत्र
मो० +9868855155, 9810420373
smdnyas99@gmail.com

आर्य समाज सैक्टर 22-ए चण्डीगढ़ में नये गुरुकुल की स्थापना

आठ गुरुकुलों के संचालक त्यागी, तपस्वी संन्यासी स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी के निर्देशन एवं डॉ० शिव कुमार शास्त्री के आचार्यत्व में संचालित होगा गुरुकुल

चण्डीगढ़ के प्रसिद्ध एवं प्रतिष्ठित आर्यसमाज, सैक्टर 22-ए के प्रधान श्री सोमदत्त शास्त्री की प्रेरणा एवं प्रयास से आर्यसमाज की कार्यकारिणी एवं साधारण सभा ने सर्वसम्मति से निर्णय लिया है कि आर्यसमाज के विशाल भवन में उपलब्ध लगभग 30 कमरे उपयोग में लाने के लिए यहाँ एक गुरुकुल संचालित किया जाए जिससे आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं को और अधिक कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा तथा आर्यसमाज के विशाल भवन का सदुपयोग भी सुन्दर तरीके से हो सकेगा। आर्यसमाज के इस ऐतिहासिक निर्णय को क्रियान्वित करने के लिए विजयदशमी (दशहरा) के दिन 11 अक्तूबर 2016 को आर्यसमाज में एक महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम को गुरुकुल स्थापना समारोह के रूप में मनाया गया।

इस समारोह में अपने सम्बोधन में स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि देश-विदेश के समस्त आर्यसमाज जिनके पास अच्छे भवन तथा पर्याप्त स्थान है, यदि वे सब अपने समाजों में ऐसे गुरुकुल प्रारम्भ कर दें तो लाखों युवाओं को आर्यसमाज की विचारधारा से जोड़ा जा सकता है। स्वामी जी ने जोर देकर आर्यों का आह्वान किया कि जब तक हम आर्यसमाजों को उपयोगी आर्यसमाज नहीं बनाएँगे और आर्यसमाजों में विविध गतिविधियाँ चलाकर उन्हें सप्ताह के सातों दिन सक्रिय नहीं रखेंगे तब तक हमें न तो नई पीढ़ी के लोग मिलेंगे और न ही आर्यसमाजों के भवन तथा सम्पत्ति सुरक्षित रख पाएँगे। अत: यह आवश्यक है कि आर्यसमाजों में छोटे-छोटे गुरुकुल प्रारम्भ करके वहाँ से अच्छे कार्यकर्त्ता, प्रचारक, उपदेशक निकाले।

इस अवसर पर अनेक गुरुकुलों के संचालक स्वामी प्रणवानन्द ने स्पष्ट किया कि जब तक हम आर्ष पाठविधि के अनुसार गुरुकुल नहीं चलाएँगे तब तक आर्यसमाज का भविष्य सुरक्षित नहीं। स्वामी जी ने घोषणा की कि इस गुरुकुल में शीघ्र ही दो दर्जन विद्यार्थी दाखिल कर दिए जाएँगे और यह गुरुकुल बहुत सुन्दर तरीके से चलेगा। उन्होंने कहा कि हमें डॉ० शिवकुमार शास्त्री जैसे आचार्य मिल गए हैं तो गुरुकुल शुरू होने में कोई कठिनाई नहीं आ सकती।

निवेदक

सोमदत्त शास्त्री	प्रेमचन्द गुप्ता
(प्रधान)	(मन्त्री)
मो: 8725800759	मो: 9216192336

छात्रवृत्ति और सम्मान समारोह सम्पन्न

मानव सेवा प्रतिष्ठान दिल्ली की ओर से 13 नवम्बर 2016 को छोटूराम धर्मशाला रोहतक में छात्रवृत्ति प्रदान तथा विद्वत्सम्मान समारोह सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इस समारोह में 110 छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्ति तथा 13 विद्वान्-विदुषियों को पन्द्रह हजार रुपये प्रति व्यक्ति प्रदान किये गये। यह समारोह जाट चैरिटेबल संस्था अमेरिका के सहयोग से किया गया। इस कार्यक्रम में आर्यसमाज के साधु-महात्मा विद्वान्, भजनोपदेशकों सहित हजारों श्रोता उपस्थित थे।

मानवसेवा प्रतिष्ठान के सभी सदस्यों ने सभी आगन्तुक सदस्यों का विधिवत् सम्मान किया तथा सभी के लिए भोजन का भी प्रबन्ध किया। प्रतिष्ठान की ओर से सभी आगन्तुकों का आभार व्यक्त किया गया कि आपके पधारने से आयोजन सफल हुआ।

निवेदक
रामपाल शास्त्री
कार्यकर्त्ता प्रधान

www.thearyasamaj.org

हमारी विशिष्ट औषधियाँ

संजीवनी तैल

यह तैल घाव के भरने में जादू का काम करता है। भयंकर फोड़े-फुन्सी, गले-सड़े पुराने जख्मों तथा आग से जले हुए घावों की अचूक दवा है। कोई दर्द या जलन किये बिना थोड़े समय में सभी प्रकार के घावों को भरकर ठीक कर देता है। खून का बहना तो लगाते ही बन्द हो जाता है। चोट की भयंकर पीड़ा को तुरन्त शान्त कर देता है। दिनों का काम घण्टों में और घण्टों का काम मिनटों में पूरा कर देता है।

मूल्य : 60-00 रुपये

च्यवनप्राश

शास्त्रोक्त विधि से तैयार किया हुआ स्वादिष्ट सुमधुर और दिव्य रसायन (टॉनिक) है। इसका सेवन प्रत्येक ऋतु में स्त्री, पुरुष, बालक व बूढ़े सबके लिए अत्यन्त लाभदायक है। पुरानी खांसी, जुकाम, नजला, गले का बैठना, दमा, तपेदिक तथा सभी हृदयरोगों की उत्तम औषध है। स्वप्नदोष, प्रमेह, धातुक्षीणता तथा सब प्रकार की निर्बलता और बुढ़ापे को इसका निरन्तर सेवन समूल नष्ट करता है। निर्बल को बलवान् और बूढ़े को जवान बनाने की अद्वितीय औषध है। च्यवन ऋषि इसी रसायन के सेवन से जवान होगये थे।

मूल्य : १ किलो २५० रुपये

नेत्रज्योति सुर्मा

सुर्मे तो बाजार में पर्याप्त मात्रा में मिल जाते हैं परन्तु इतना लाभप्रद और सस्ता सुर्मा मिलना कठिन है। इसके लगाने से आंखों के सब रोग जैसे आंखों से पानी बहना, खुजली, लाली, जाला, फोला, नजर की कमजोरी आदि विकार दूर होते हैं तथा बुढ़ापे तक आंखों की रक्षा करता है। दुखती आंखों में भी इसका प्रयोग अत्यन्त लाभप्रद है।

मूल्य : ३०-०० रुपये

बलदामृत

हृदय और उदर के रोगों में रामबाण है, इसके निरन्तर प्रयोग से फेफड़ों की निर्बलता दूर होकर पुनः बल आजाता है। पीनस (सदा रहनेवाला जुकाम और नजले) की औषधि है। वीर्यवर्धक, कासनाशक, राजयक्ष्मा, श्वास (दमा) के लिए लाभकारी है। रोग के कारण आई निर्बलता को दूर करता है तथा अत्यन्त रक्तवर्धक है।

मूल्य : १४०-०० रूपये

आर्य आयुर्वेदिक रसायनशाला, गुरुकुल झज्जर

www.thearyasamaj.org

हमारे प्रमुख प्रकाशन

१.	व्याकरणमहाभाष्यम् (५ जिल्द) (प्रदीप उद्योत, विमर्शसहित)	१०५०-००
२.	अष्टाध्यायी (पाणिनि)	१५-००
३.	कारिकाप्रकाश (सुदर्शनदेव)	२०-००
४.	लिङ्गानुशासनवृत्ति (सुदर्शनदेव)	१५-००
५.	फिट्सूत्रप्रदीप (सुदर्शनदेव)	१०-००
६.	छन्दःशास्त्रम् (व्रतिमंगलावृत्ति)	४५-००
७.	काव्यालकारसूत्राणि (व्रतिमंगलावृत्ति)	२५-००
८.	निरुक्त (हिन्दीभाष्य) (चन्द्रमणि)	२५०-००
९.	योगार्यभाष्य (आर्यमुनि)	२०-००
१०.	सांख्यार्यभाष्य (आर्यमुनि)	४०-००
११.	मीमांसार्यभाष्य (३ भाग)	२६०-००
१२.	वैशेषिकार्यभाष्य (आर्यमुनि)	६०-००
१३.	न्यायार्यभाष्य (आर्यमुनि)	१००-००
१४.	वेदान्तार्यभाष्य (आर्यमुनि)	१२०-००
१५.	महारानी सीता (स्वामी ओमानन्द)	१००-००
१६.	अष्टाध्यायीप्रवचनम् (६ भाग)	६५०-००
१७.	छान्दोग्योपनिषद्भाष्यम् (शिवशंकर)	२५०-००
१८.	वृहदारण्यकोपनिषद्भाष्यम् (शिवशंकर)	१५०-००
१९.	उपनिषत्समुच्चय (पं० भीमसेन)	१००-००
२०.	ओरिजनल फिलासफी ऑफ योगा	२५०-००
२१.	मनोविज्ञान तथा शिवसंकल्प	३०-००
२२.	दयानन्दप्रकाश (स्वा० सत्यानन्द)	५०-००
२३.	धर्मनिर्णय (१-४ भाग)	८०-००
२४.	वैदिकविनय (१-३ भाग)	६०-००
२५.	देशभक्तों के बलिदान	१२५-००
२६.	सत्यार्थप्रकाश (दयानन्द)	२००-००
२७.	स्वतन्त्रता संग्राम में आर्यसमाज का योगदान	४०-००
२८.	यजुर्वेद संहिता (मन्त्रानुक्रमणि)	१००-००
२९.	सामवेद संहिता (मन्त्रानुक्रमणि)	८०-००
३०.	अथर्ववेद संहिता (मन्त्रानुक्रमणि)	३५०-००
३१.	ऋग्वेद संहिता (मन्त्रानुक्रमणि)	३५०-००
३२.	सामवेद पदसंहिता	२५-००
३३.	ओमानन्द अभिनन्दन ग्रन्थ	१००-००
३४.	सुखी जीवन (सत्यव्रत)	३०-००
३५.	महापुरुषों के संग में (सत्यव्रत)	१५-००
३६.	घर का वैद्य (१-५ भाग)	१००-००
३७.	दैनंदिनी (सत्यव्रत)	२५-००
३८.	ब्रह्मचर्य के साधन (१-११ भाग)	६०-००
३९.	संस्कृतप्रबोध (आचार्य बलदेव)	२०-००
४०.	संस्कारविधि (स्वामी दयानन्द)	५०-००
४१.	स्वामी ओमानन्द ग्रन्थमाला (४ जिल्दों में)	१२००-००
४२.	दयानन्द लहरी (मेधाव्रत आचार्य)	१५-००
४३.	विरजानन्दचरितम् (मेधाव्रत आचार्य)	१५-००
४४.	रामायणार्यभाष्य (दो भाग)	३२०-००
४५.	महाभारतार्यभाष्य (दो भाग)	४५०-००
४६.	स्वामी ओमानन्द जीवन (वेदव्रत शास्त्री)	४००.००

आर.एन.आई. द्वारा रजि. नं. 11757

पंजीकरण संख्या-P/RTK/85-3/2017-19

सुधारक लौटाने का पता :-

गुरुकुल झज्जर, जिला झज्जर (हरयाणा)-124103

E-mail : gurukuljhajjar@gmail.com

ग्राहक संख्या

श्री ______________________

स्थान ______________________

डा० ______________________

जिला ______________________

प्रकाशक आचार्य विजयपाल गुरुकुल झज्जर ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, गोहाना मार्ग, रोहतक में मुद्रक-वेदव्रत शास्त्री के प्रबन्ध से छपवाया।